

# UNIVERSAL

## Record File

29-2-1874  
(Ms.)

File 2

File No. \_\_\_\_\_

Name \_\_\_\_\_

Address \_\_\_\_\_

Subject \_\_\_\_\_

Serial No. \_\_\_\_\_







संस्कृत साहित्य सौख्यम्

---

लेखकः —  
सत्यव्रत शास्त्री







## प्राच्य धर्म

अनसाधारण में संस्कृतभाषा के विषय में एक धारणा यह मूल है यही है और वह यह कि संस्कृत बहुत लिख है। संस्कृत के सांस्कृतिक ह्रास की प्रथम मूर्ति में इस धारणा का बहुत बड़ा हाथ रहा है। पर यह धारणा कि वही भाषा जो और निर्मूल है यही सिद्ध करने के हेतु यह हमारा उपास है। इसमें हमें कि वही लक्ष्य लाना मिला है यह इस प्राप्ति का ये प्रथम यक और प्रथम लक्षण ही जाता सकते हैं। इसी प्रकार का नन्द आलाप संस्कृत से बहुत उर जाता है। यह इस भाषा को बहुत बढ़ाने लक्ष्यता है। हमारा उद्देश्य इस पुराण में यही रहा है कि संस्कृत को फिर से सरल रूप में उल्लूक दिया जाय जिससे कि नन्दें विद्यार्थी भी इसके प्रति आकर्षित हों और इस देवभाषा का परिचय प्राप्त कर सकें।

दिल्ली - वैशाख पूर्णिमा

संस्कृत का तुच्छत्व -  
सत्त्वतः शास्त्री







प्रथमः पाठः

सः पठति ।

ता पठतः ।

त पठन्ति ।

सः लिखति ।

ता लिखतः ।

त लिखन्ति ।

सः पठति लिखति च ।

ता पठतः लिखतः च ।

त पठन्ति लिखन्ति च ।

१- नये शब्दः -

अभ्यास

मा बोलक

सः वह (पुरुष) पठ - पठति

ता वे दोनों (पुरुष) लिख - लिखति

त वे सब (पुरुष) च - अभ्यास

२. समास के नियमः -

पठति

पठतः

पठन्ति

लिखति

लिखतः

लिखन्ति

३. पर का कामः -

संस्कृत में अपावाद का नियमः -

वे सब लिखत ५ ।

वे सब पठत ५ ।

वह पठता ५ ।

वह लिखता ५ ।

वे दोनों लिखत ५ ।

वे दोनों पठत ५ ।







## प्राच्य धर्म

अनलाप १२७ में संस्कृतभाषा के विषय में एक धारणा बड़ा मूल है यही है और वह यह कि संस्कृत बहुत लिख है। संस्कृत के सावर्त्रिक हस्त की पृष्ठभूमि में इस धारणा का बहुत बड़ा हाथ रहा है। पर यह धारणा कितनी भ्रान्ति और निर्मूल है यही सिद्ध करने के हेतु यह हमारा उद्देश्य है। इसमें हमें कितनी लक्षणा मिली है यह इस प्राप्ति का के प्रमाणों और प्रमाणों द्वारा ही बताया जा सकता है। इसी प्रकार का नन्हा बालक संस्कृत से बहुत डर जाता है। यह इस भाषा को बहुत बढ़ा न समझता है। हमारा उद्देश्य इस पुराण में यही रहा है कि संस्कृत को फिर से सरल रूप में उल्लूक दिया जाय जिससे कि नन्हें विद्यार्थी भी इसके प्रति आकर्षित हों और इस देवभाषा का परिचय प्राप्त कर सकें।

दिल्ली - वैशाख पूर्णिमा

संस्कृत का तुच्छत्व  
सत्यतया ही







प्रथमः पाठः

सः पठति ।

॥  
ता पठतः ।

त पठन्ति ।

सः लिखति ।

॥  
ता लिखतः ।

त लिखन्ति ।

सः पठति लिखति च ।

॥  
ता पठतः लिखतः च ।

त पठन्ति लिखन्ति च ।

२- नये शब्दः -

अपभ्रंशः

मा बोलक

सः वह (पुरुष) पठ - पठति  
॥  
ता वे दागो (पुरुष) लिख - लिखति  
त वे सब (पुरुष) च - ॥  
अपभ्रंश

३. लक्षणों के लिये -

पठति पठतः पठन्ति  
लिखति लिखतः लिखन्ति

३. पर का काम -

संस्कृत में अपभ्रंश ~~लिखति~~ का प्रयोग -

वे सब लिखत ५।

वह पठत ५।

वे दागो लिखत ५।

वे सब पठत ५।

वह लिखत ५।

वे दागो पठत ५।



Duplicate

Serial No. 1785

Roll No. 80069

PANJAB UNIVERSITY  
( SEAL )

MATRICULATION EXAMINATION  
SESSION 1958

This is to certify that Pritam Dass son of  
Shri Beli Ram and of the B.K.High School, Ghee Mandi,  
Amritsar passed the Matriculation Examination of this  
University held in March 1958 and was placed in the  
Second Division obtaining 484 marks.

Passed also in One Additional Subject.

Date of Birth First October One Thousand Nine  
Hundred and forty only (1.10.1940)

CHANDIGARH  
12th January 1959.

Sd/-----  
ASSISTANT REGISTRAR(EXAMS).

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . . 1959.



दिनांक : ५/६ :

सा पठति ।  
 त पठतः ।  
 ताः पठन्ति ।

सा नमति ।  
 त नमतः ।  
 ताः नमन्ति ।

सा चलति ।  
 त ~~चलति~~ चलतः ।  
 ताः अपि चलन्ति ।

सा चलति ~~न चलति~~ ।  
 त चलतः पठतः च ।

ताः न लिखन्ति न च पठन्ति ।

सा नमति । तः न नमति ।  
 त न लिखतः । ता लिखतः ।  
 त चलन्ति । ताः न चलन्ति ।

१. प्रथमः

२. नयः शब्दः —

सा — वह (स्त्री या कन्या) । नम — नमस्कार करना ।  
 त — वे दोनों (कन्याएं या स्त्रियां) । चल — चलना ।  
 ता — वे सब (कन्याएं या स्त्रियां) । अपि — भी ।

३. ~~समस्त कर्तृत्व~~ हिन्त स्थानों का पूर्ण कोटि —

१. .... पठतः । ४. ते .... चलन्ति च ।  
 २. .... लिखन्ति । ५. ते पठथः लिखथः .... ।  
 ३. ता .... । ६. ता अपि .... ।

जो का काम

३. १. प्रवाद का अर्थ —

१. वे सब (स्त्रियां) नमस्कार करती हैं ।  
 २. वह (बालक) लिखता है, वह (कन्या) नहीं लिखती ।  
 ३. वे दोनों भी चलते हैं ।  
 ४. सब पढ़ते हैं लिखते हैं और नमस्कार करते हैं ।



Duplicate

Serial No. 1785

Roll No. 80069

PANJAB UNIVERSITY  
( SEAL )

MATRICULATION EXAMINATION

SESSION 1958

This is to certify that Pritam Dess son of  
Shri Bell Ram and of the B.K.High School, Ghee Mandi,  
Amritsar passed the Matriculation Examination of this  
University held in March 1958 and was placed in the  
Second Division obtaining 484 marks.

Passed also in One Additional Subject.

Date of Birth First October One Thousand Nine  
Hundred and forty only (1.10.1940)

CHANDIGARH  
12th January 1959.

Sd/-----  
ASSISTANT REGISTRAR(EXAMS).

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.



११: ५४१५

$\overline{P} : \overline{P} \cup \overline{D}$

ता: २५/५ २०१८

$\frac{1}{D}$   $\overline{491}$ :  $\overline{484}$ :  $\overline{4}$  1

ता: न लिखन्ति न च पठन्ति ।

$\frac{L}{t} = \frac{1}{\tau}$  । तब:  $n = \frac{1}{\tau}$  ।

1,4241(7)

2. 74 2109: —

ता - व (कव) (क-पाय या स्त्रियां) गाय - गी

$$2. \quad \frac{1}{2} \cdot \frac{1}{2} \cdot \frac{1}{2} = \frac{1}{8} \quad \text{or} \quad \frac{1}{2} \cdot \frac{1}{2} \cdot \frac{1}{2} = \frac{1}{8}$$

सु. सु. सु.

174 175 176

3. /  $\overline{149791441154} : -$

1. व लव (स्त्रियां) रामलका करती है ।  
 2. वह (बालक) लिखता है, वह (कन्या) नहीं लिखती ।  
 3. वे दोनों भी खेलते हैं ।  
 4. लव पढ़ते हैं, लिखते हैं, स्नान करते हैं, रामलका करते हैं ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection



Duplicate

Serial No. 1785

Roll No. 80069

PANJAB UNIVERSITY  
( SEAL )

MATRICULATION EXAMINATION  
SESSION 1958

This is to certify that Pritam Dass son of  
Shri Beli Ram and of the B.K.High School, Ghee Mandi,  
Amritsar passed the Matriculation Examination of this  
University held in March 1958 and was placed in the  
Second Division obtaining 484 marks.

Passed also in One Additional Subject.

Date of Birth First October One Thousand Nine  
Hundred and forty only (1.10.1940)

CHANDIGARH  
12th January 1959.

Sd/-----  
ASSISTANT REGISTRAR(EXAMS).

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.



तृतीयः पाठः

त्वम् इसल १

युवाम् इसथः १

यूयम् इसथ १

त्वम् वदाल १

युवाम् वदथः १

यूयम् वदथ १

त्वम् त्वम् पठाल १

त्वम् युवाम् लिरवथः १

त्वम् यूयम् नमथ १

त्वम् वदाल लिरवात इसाल न १

त्वम् युवाम् अपि लिरवथः वदथः इसथः न ?

यूयम् न पठथ न चलथ न न इसथ १

त न लिरवान्त परम् युवाम् लिरवथः १

प्रथमः

१. नमः शब्दः — त्वम् — त

युवाम् — तुम दागा

यूयम् — तुम लव

इस

इसगा

वद

बालगा

परम्

परन्त

२. त्वम् के त्वम् :-

इसगा

इसथः

इसथ

वदाल

वदथः

वदथ

३. चार का कामः —

प्रथमः का क्रिया :-

१. तुम दागा पढ़त १ ५

२. न लव निरवत ५ इसल ५ १

३. त्वम् तु बालगा ५ पर वद लिरवत ५ १

४. तुम दागा मा. नमस्कार करत ५ १

५. तुम लव चलत ५ तथा बालगा ५ १



S.No..59059

Roll No. 80069

(SEAL)

PANJAB

UNIVERSITY

DETAILED MARKS CERTIFICATE FOR PASS CANDIDATES  
MATRICULATION EXAMINATION 1958.

Name...Pritam Dass son of Shri Beli Ram

S.NO.	Subjects	Marks obtained	Maximum Marks
1.	English	126	200
2.	Mathematics or Arithmetic & Household Accounts	130	200
3.	1) History	45	90
	11) Geography	27	60
4.	Science	64	150
5.	Hindi	92	150

Total 484

(Four Hundred and eighty four only)

This certificate is valid only if produced  
along with Original certificate

Line below marks indicates failure in the subject  
and marks not included in the grand total.

CHANDIGARH  
May 16, 1958.

sd/---J.R.AGNHOTRI  
REGISTRAR

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . 1959.



प्रथमः पृष्ठः

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

२. प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

२. प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

३. प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १

प्रथमः पृष्ठः १



S.No..59059

Roll No. 80069

(SEAL)

PANJAB UNIVERSITY  
 DETAILED MARKS CERTIFICATE FOR PASS CANDIDATES  
 MATRICULATION EXAMINATION 1958.

Name...Pritam Dass son of Shri Belli Ram

S.NO.	Subjects	Marks obtained	Maximum Marks
1.	English	126	200
2.	Mathematics or Arithmetic & Household Accounts	130	200
3.	1) History	45	90
	11) Geography	27	60
4.	Science	64	150
5.	Hindi	92	150

Total 484

(Four Hundred and eighty four only)

This certificate is valid only if produced  
 along with Original certificate

Line below marks indicates failure in the subject  
 and marks not included in the grand total.

CHANDIGARH  
 May 16, 1958.

sd/---J.R.AGNHOTRI  
 REGISTRAR

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.



प्रत्ययः पठः

अपहम् खादाम् ।

अपावाम् खादावः ।

वयम् खादामः ।

अहम् खादाम् ।

अपावाम् खादावः ।

वयम् खादामः ।

वयम् त सदा खादामः खलामः अपि ।

ता सदा पठति न खलति न च खादति ।

अपावाम् खलावः अपि इलावः अपि ।

अपहम् न खादाम् मुक्ताम् खादामः ।

ता अपि खादतः त अपि खादतः ।

वयम् न इहामः परम् त इहामि ख ।

2. नमः खदः —

अपहम् — म

अपावाम् — हम दावा

वयम् — हम सब

खाद — खाता

खाद — खाता

(अहम्) खाद — खाता

सदा — हमेशा

न — नहीं

ख — ख

2. लिंगान्तः का लिंगः —

खादाम्

खादाम्

खादावः खादामः

खादावः खादामः

3. पर का कामः —

(क) लिखित स्थावरा का प्रातः का कामः —

1. अपहम् ... पठाम् ... लिखामि ।

2. अपावाम् ... ख ... न ।

3. वयम् ... ख ... ?

सदा ख इहामः ।

(ख) अग्रजना का कामः —

1. हम सब जानते हैं 2. हम सब इसे पढ़ते हैं 3. व दा



S.No..59059

Roll No. 80069

(SEAL)

PANJAB

UNIVERSITY

DETAILED MARKS CERTIFICATE FOR PASS CANDIDATES  
MATRICULATION EXAMINATION 1958.

Name...Pritam Dass son of Shri Bell Ram

S.NO.	Subjects	Marks obtained	Maximum Marks
1.	English	126	200
2.	Mathematics or Arithmetic & Household Accounts	130	200
3.	i) History	45	90
	ii) Geography	27	60
4.	Science	64	150
5.	Hindi	92	150

Total 484

(Four Hundred and eighty four only)

This certificate is valid only if produced  
along with Original certificateLine below marks indicates failure in the subject  
and marks not included in the grand total.CHANDIGARH  
May 16, 1958.sd/---J.R.AGNIHOTRI  
REGISTRAR

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.



(कती).

बालः आवर्तः ।  
 बाला आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।

बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।

बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।

बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।

५२५५५

१. नमः शिवायः —

बालः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।

बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।

२. नमः शिवायः —

बालः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।

बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।

३. नमः शिवायः —

बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।

४. नमः शिवायः —

बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।



S.No..59059

Roll No. 80069

(SEAL)

PANJAB

UNIVERSITY

DETAILED MARKS CERTIFICATE ~~FOR~~ PASS CANDIDATES  
MATRICULATION EXAMINATION 1958.

Name...Pritam Dass son of Shri Beli Ram

S.NO.	Subjects	Marks obtained	Maximum Marks
1.	English	126	200
2.	Mathematics or Arithmetic & Household Accounts	130	200
3.	i) History	45	90
	ii) Geography	27	60
4.	Science	64	150
5.	Hindi	92	150
Total		484	

(Four Hundred and eighty four only)

This certificate is valid only if produced  
along with Original certificate

Line below marks indicates failure in the subject  
and marks not included in the grand total.

CHANDIGARH  
May 16, 1958.

sd/---J.R.AGNHOTRI  
REGISTRAR

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.



(कृती).

बालः आवर्तः ।  
 बाला आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।

बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।

बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।

बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।

बालाः आवर्तः ।

१. बालाः आवर्तः —

बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।

बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।

२. बालाः आवर्तः —

बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।

बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।

३. बालाः आवर्तः —

बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।

४. बालाः आवर्तः —

बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।  
 बालाः आवर्तः ।



From:-

The Headmaster,  
BALMOKAND KHATRI HIGH SCHOOL,  
(Ghee Mandi)Amritsar.

Dated May 20, 1958.

CERTIFIED that Pritam Dass Roll No. 80069  
son of Shri Beli Ram matriculated from this school in  
the year 1958. He secured 484 marks and was placed in  
the Second Division. He was obedient, respectful and  
well-behaved. He was a good student and never gave me  
any chance for complaint. He bore a good moral conduct  
and character.

He took an active part in games and other extra-  
mural activities of the school. He comes of a respect-  
able family and his date of birth as per this school  
record is First October, One Thousand nine hundred and  
forty (1-10-1940)

Wherever he goes, he carries my good wishes  
with him.

Sd/---Dev Raj,  
Headmaster,  
B.K. HIGH SCHOOL,  
Attested to be a true copy Ghee Mandi, Amritsar.

Signature

Seal

Dated . . 1959.



(विषयः)

संख्या: पाठः

कवि

रवः पादं चलति ।

मृगः पादं चाम् चलति ।

मृगः पादः चलति ।

जलः हस्तं पत्रं लिखति ।

मृः कर्णं चाम् शब्दं प्रकाशयति ।

गजः दन्तः जलं चरति ।

वधुः नेत्रं चाम् परचाम् ।

जलेन जीवनं भवति ।

जीवाः पन्नं जानन्ति ।

युधुः कर्णं चाम् प्रकाशयति ।

मृगः मृगं वदन्ति स्वादन्ति च ।

विष्णुः गोपालः नेत्रं काणः भवति ?

मोहनः कर्णं चाम् मृगः प्रकाशयति ।

कृषकः दात्रं केदारं लुण्ठति ।

वृषभा हलेन क्षत्रं कर्षतः ।

चारिकः मानं गामं गच्छति ।

कात्राः द्विचारिकः विष्णुं चाम् गच्छन्ति ।

सूर्येण दीपनं च प्रकाशः भवति ।

परिचयः

2. मृग शब्दः - रवः - लोका

पाद - पाद

कर्ण - काण

मृग - मृग

कृषकः - विष्णु

वृषभ - वृष

चार - चार

कृष - कृष

प्रकाश - प्रकाश

2. लक्षणं कतिपयः -

जलं

जलं चाम्

जलः

रामं

रामं चाम्

रामः

चारं

चारं चाम्

चारः

जलं

जलं चाम्

जलः

3. मृग का कामः -

मृग का कामः - 1. मृग मृगं दात्रं लुण्ठति ।

2. काणं लुण्ठति मृगं प्रकाशं दात्रं लुण्ठति ।

3. लोकां गोपालं लुण्ठति मृगं चाम् ।

4. रामं रवं दात्रं लुण्ठति मृगं चाम् दात्रं लुण्ठति ।







पृष्ठ: ५१६:

संयोजन

नृपः बाह्यप्रायः चरणं यच्छति ।  
 नृपः बाह्यप्रायः चरणं यच्छति ।  
 नृपः बाह्यप्रायः चरणं यच्छति ।  
 चरणं दातुं परोपकाराय च भवति ।  
 सज्जनः साधकः सज्जनं यच्छति ।  
 दाताः साधकं विद्यालयं यच्छति ।  
 आला साधकं साधकालयं यच्छति ।  
 सज्जनं जलाम् कूपं यच्छति ।  
 साधकः वृक्षमाश्रयं यच्छति ।  
 जलकः पुत्राश्रयं पुस्तकं यच्छति ।  
 सज्जनः परोपकाराय स्व जीवन्ति ।  
 विद्यालयं कूपं यच्छति ।  
 साधकः साधकः यच्छति ।  
 परमेश्वराय नमः । शिष्यः यच्छति ।  
 इन्द्राय यच्छति । सज्जनं यच्छति ।

संयोजन

१. नमः शब्दः - परोपकार - दसों की भलाई  
 साधक - शिष्य  
 कूप - कुआँ  
 विद्यालय - स्कूल  
 कुपुत्र - कौतुक  
 सज्जन - शिष्य  
 दा (यच्छ) - देना  
 जीव - जीवना

२. लिंगान्तर के लिये :-  
 साधक साधिका  
 दाता दात्री  
 साधकः साधिकाः

३. पर को काम :-

(क) मानव समाज :- आलाय, जलाम्, चरणं, नमः, यच्छति ।  
 (ख) गुरुनाथ की शिष्य :- १. वह जो परोपकार के लिये जीता है ।  
 २. हम साधक के लिये प्रणाम का जोर है । ३. साधक साधिका के लिये  
 यच्छति । ४. पिता दा पुत्रों के लिये पुस्तक देता है ।  
 ५. साधक साधिका के लिये साधक देता है ।







नवमः पृष्ठः

प्रपादन

वृक्षात् ~~कलानि~~ कलानि पतन्ति ।  
 वृक्षाभ्याम् कलानि पतन्ति ।  
 वृक्षेभ्यः कलानि पतन्ति ।  
 बालकाः ग्रामात् विद्यालयम् गच्छन्ति ।  
 परिवाराद् परिवारभ्याम् पततः ।  
 छात्राः क्रीडायां नगरात् बहिः यावन्ति ।  
 ग्रामे ग्रामे पठ्याय दूरात् गच्छन्ति ।  
 युवान् भोजनाय ग्रामात् कुत्र गच्छन्ति ।  
 लोकाः ग्रामेभ्यः तत्र हननाय गच्छन्ति ।  
 नगराभ्यः अपि लोकाः यातः तत्र गच्छन्ति ।  
 पारसकाः लोकान् पारस्यः रक्षन्ति ।  
 किम् दालाः कूपात् जलम् न मानयन्ति ।  
 हिमालयात् नदाः प्रभवन्ति ।  
 ग्रामात् वृक्षिकाः भवन्ति ।  
 नृपः प्रासादात् लोकान् पर्याप्ति ।  
~~सर्व~~ क्षेत्रात् पूर्व-कालान् भवति ।  
 पश्चिमाः ग्रामात् ग्रामम् गच्छन्ति ।

प्रपादन

१. नमो शब्दः - परिवाराद् - कुटुम्बिकात् न ग्रामाय - ग्रामम्  
 क्रीडा - खेल वृक्षिक - विच्छेद  
 पारसक - लिफाई पालाद - कटुल  
 नद - बगी नदी पश्चिम् - उत्पन्न होता

२. लगभग के लिये :- वृक्षात् वृक्षाभ्याम् वृक्षेभ्यः  
 परिवारात् परिवारभ्याम् परिवारभ्यः  
 ग्रामात् ग्रामाभ्याम् ग्रामेभ्यः

३. कर के लिये :- (क), रिक्त स्थानों को पूर्ण कीजिये :- १. परिवाराद् :  
 पतति । २. वृक्षेभ्यः कलानि ... न पतन्ति । ३. किम् दालाः  
 जलम् न मानयन्ति ? ४. ... वृक्षिका भवन्ति । ५. वयम् ... ग्रामम्  
 गच्छामः ।

(ख) प्रपादन के लिये :- लिफाई लोगों को पाला के रक्षा करत है। छात्रों के  
 के पढ़ाने के लिये। छात्र पठ्याय के लिये दूर के ग्रामों जाते हैं। ग्राम  
 बाहर विद्यालय है। भोजनालय छात्रावास के दूर नहीं है।







देशः पाठः

लक्षणम्

काकल्य वर्णः कृष्णः भवति ।

काकपाः वर्णः कृष्णः भवति ।

काकागाम वर्णः कृष्णः भवति ।

शुकागाम वर्णः हरितः भवति ।

सुकागाम वर्णः श्वेतः भवति ।

मृगल्य वर्णः नीलः भवति ।

गामल्य वर्णः पीतः भवति ।

नृपल्य जलम् मयूरम् भवति ।

सुमृदल्य जलम् शारम् भवति ।

~~नृपल्य रसिकाः लोकान् रक्षन्ति ।~~

प्राक्कागाम चौरभ्यः भयम् भवति ।

सज्जनागाम दुर्जनभ्यः भयम् भवति ।

नृपल्य रसिकाः लोकान् रक्षन्ति ।

हस्तयोः देशः गरवाः भवन्ति ।

भारता वर्णम् कृष्णकाणाम् देशः गच्छति ।

प्राक्काः कलागाम रत्नम् पिबन्ति ।

निष्पत्तिः नृपल्य शीतलम् जलम् पिबन्ति ।

पिकागाम जीतान् मयूराणि भवन्ति ।

कपातल्य पक्षी कोमला भवतः ।

लंकारल्य जनकः परमेश्वरः गच्छति ।

गणेशाय

2. गणेशायः -	काक -	काका	कृष्णः	काका
	शुक -	शिता	हरितः	हरा
	मृग -	मृगला	नीलः	नीला
	नृप -	नृपल	पीतः	पीला
	पिक -	पिका	शारम्	श्वेत - ५

2. लक्षणम् के निम्न :-	काकल्य	काकपाः	काकागाम
	रामल्य	रामपाः	रामागाम
	मृगल्य	मृगपाः	मृगागाम

3. पर का काम :-	(क) विस्तारार्थं की पूर्ति काजिये :-
1. वर्णः	हरितः भवति । 2. प्राक्काः रत्नम्
3. पिकागाम	मयूराणि भवन्ति । 4. सज्जनागाम भयम्
5. हस्तयोः	गरवाः भवन्ति ।

(ख) 1. इस दो नृप का ठंडा जल पीत ५ । 2. राम का पिता मोजन श्वेत ५ ।  
 3. मृग का रत्न मोटा होता है ५ । 4. पिका का रंग पीला होता है ५ ।  
 5. नृप का दोनो काँचों का रंग पीला होता है ५ ।



—

3



संस्कृत

काकल्य वर्णः कृष्णः भवति ।

काकयाः वर्णः कृष्णः भवति ।

काकागाम वर्णः कृष्णः भवति ।

शुकागाम वर्णः हिरतः भवति ।

वनागाम वर्णः श्वेतः भवति ।

मृगल्य वर्णः नीलः भवति ।

अपल्य वर्णः पीतः भवति ।

नूपल्य जलम् मयूरम् भवति ।

समुद्रल्य जलम् शारम् भवति ।

~~नूपल्य सेवकाः लोकान् रक्षन्ति ।~~

आरिकागाम चौर्यः भयम् भवति ।

सज्जनागाम दुर्जन्यः भयम् भवति ।

नूपल्य सेवकाः लोकान् रक्षन्ति ।

हस्तयोः दश नखाः भवन्ति ।

भारतम् वषट् कुवकाणाम् दशः भवति ।

आरिकाः कलागाम रसम् पिवन्ति ।

निलयाः नूपल्य शीतलम् जलम् पिवन्ति ।

पिकानाम् जीताणि मयूराणि भवन्ति ।

कापातल्य पक्षी कोमला भवतः ।

लंकारल्य जनकः परमेश्वरः भवति ।

अथ माल

2. नमस्त्वयः -

काक	-	कावा	कृष्णः	-	काला
शुक	-	शिता	हिरतः	-	हरा
वृक	-	वृजला	नीलः	-	नीला
वृक्षत	-	वृक्षत	पीतः	-	पीला
पिक	-	कोयल	शारम्	-	श्वारा

भारत - ५

2. लाम्बो के लिये :-

काकल्य	काकयाः	काकागाम
रामल्य	रामयाः	रामागाम
फलल्य	फलयाः	फलागाम

3. घर का नाम :- (क) दिव्यस्थानों के प्रति मान्य :-
1. वर्णः हिरतः भवति । 2. चक्रिकाः रसम्
  3. पिकानाम् मयूराणि भवन्ति । 4. लज्जनागाम भयम्
  5. हस्तयोः नखाः भवन्ति ।
- (ख) 2. हम दो नूप का ठंडा जल पीते हैं । 2. राम का पिता मोज़ा खाता है ।  
3. प्लो का रंग मोठा होता है । 4. मृग का रंग काला नहीं होता है ।  
5. स्या दोनो काँवों का रंग काला नहीं है ।







जलानि वृक्षा सान्ति ।  
जलानि वृक्षाः सान्ति ।  
जलानि वृक्षा सान्ति ।

शुकः परजराक जाता ।  
शुकाः परजराकाः स्तः ।  
शुकाः परजराक सान्ति ।

वने सिंहाः वलन्ति । मुग्धाः अपि तत्र वलन्ति । मीनाः नदेषु वलन्ति ।  
ग्रीष्मे कृपावाम् जलम् शीतलम् भवति । तदाकालम् जलम् शीतलम्  
शीतलम् भवति । वलन्तं पुष्पाणि विकलान्ति । पुष्पेषु मधुरम्  
रसम् भक्षराः पिबन्ति । आनिकाः ग्रीष्मे हिमजलम् पिबन्ति ।  
कृष्णकाः हिमन्तं रुसदण्डावाम् रसम् पिबन्ति । मम हस्तयोः पुस्तके  
स्तः । किम् तव गणनयोः तुणानि सान्ति ?

सूर्यः अपाकारो भूमति । चन्द्रः अपि अपाकारो भूमति ।  
मुग्धाः तदाकल्पे तरे जलम् पिबन्ति । मुग्धाः गृहेषु वलन्ति,  
मुग्धाः रवणाः गृहेषु, सदाः च विलुष । दण्डे प्लुतम् भवति ।  
कालियेन संपन्नं बलम् भवति ।

अभ्यास

१. नये शब्दः - परजराक - पिजरा      गीड - खोलला  
मीन - मछ      स्तः - (बेटा) है।  
हिम - वर्षा      सान्ति - (बलव) है।  
इसदण्ड - गन्ना      विरुक्ल - खिलना

२. लभ्यमाने के लिये - वृक्षा वृक्षायाः वृक्षेषु  
नर नरयोः नरेषु  
पल पलयोः पलेषु

३. पर का काम :- (क), गीटा का वाक्यों में पर्याय का प्रयोग :-  
विलुष, ग्रीष्मे, विकलान्ति, हिमजलम्, हस्तयोः ।

(ख) अनुवाद के लिये -

१. शिव हिमालय पर रहता है। २. क्या पक्षी खोलला में गहरा  
है? ३. मेरे पिता जी अम्बाला नगर में रहते हैं। ४. परजराक पक्षी के लोच  
संग्रह में प्रविष्ट है। ५. पक्षी अधिक लड़क पर चलते हैं।  
ग्रीष्म में लोग मज्जन करते हैं।







रक 1421: पृष्ठ 16:

पृष्ठ 16

जलानि वृक्षानि सन्ति ।

जलानि वृक्षयोः सन्ति ।

जलानि वृक्षस्य सन्ति ।

शुक्रः पराजयकः स्यात् ।

शुक्रः पराजयकयोः सन्ति ।

शुक्राः पराजयकस्य सन्ति ।

वर्णसिंहाः वलन्ति । मृगाः अपि तत्र वलन्ति । मीनाः नदेषु वलन्ति ।  
 ग्रीष्मे कृपावाम् जलम् शीतलम् भवति । तदाकालम् जलम् शीतलम्  
 शीतलम् भवति । वलन्तं पुष्पाणि विकलानि । पुष्पस्य मधुरम्  
 रसम् भक्षराः पिबन्ति । शरीकाः ग्रीष्मे हिमजलम् पिबन्ति ।  
 कृषकाः हिमन्ते इन्द्रधनुश्वाम् रसम् पिबन्ति । मम इत्येताः पुस्तके  
 सन्ति । किम् तव नयनयोः तृणानि सन्ति ?

सूर्यः अपाकारो भवति । चन्द्रः अपि अपाकारो भवति ।

मृगाः तदाकल्पे तटे जलम् पिबन्ति । मनुष्याः गृहेषु वलन्ति,  
 मृगाः रव्याः गृहेषु, सपाः च विलेखे । दृग्मे पृथग् भवति ।  
 कालयुगे संपन्नं बलम् स्यात् ।

## अभ्यास

१. नये शब्दः - पराजयक - पिजरा

जान - मर  
 तव - तव

मीन - मत्स्य

हिम - वर्ष

इन्द्रधनु - गन्ध

ग्रीष्म - शीतल

सन्ति - (बल) हैं

सन्ति - (बल) हैं

विकल - खिलना

२. निम्नलिखित कालियः - वृक्ष

नर

वृक्षयोः

वृक्षस्य

नरयोः

नरस्य

जल

जलयोः

जलस्य

३. परका नामः - (क), शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करिए -

विलेख, ग्रीष्मे, विकलानि, हिमजलम्, इत्येताः ।

(रव) १. पुनर्वाक्य का प्रयोग -

१. शिव हिमालय पर रहता है । २. क्या पत्नी पालना में नहीं  
 रहते ? ३. मेरे पिता जो अपना बाला नगर में रहते हैं । ४. पराजयक पदों के लोग  
 संसार में विलिखे हैं । ५. मेरी पार्थिव लड़क पर चलते हैं ।  
 ६. गाँवों में लोग मजदूर होते हैं ।







जलानि वृक्षानि सन्ति ।

जलानि वृक्षयोः सन्ति ।

जलानि वृक्षेषु सन्ति ।

शुक्रः परजराक सन्ति ।

शुक्राः परजराकयोः सन्ति ।

शुक्राः परजराकषु सन्ति ।

वर्णसिंहाः वलन्ति । मृगाः अपि तत्र वलन्ति । मीनाः नदेषु वलन्ति ।  
गीष्मं कृपागाम् जलम् शीतलम् भवति । तदाकागाम् जलम् शिशिरं  
शीतलम् भवति । वलन्तं पुष्पाणि विकलान्ति । पुष्पेषु मधुरम्  
रसम् भक्षराः पिबन्ति । मृगिकाः गीष्मं हिमजलम् पिबन्ति ।  
कृषकाः हिमन्तं सुसदृशगाम् रसम् पिबन्ति । मम हस्तयोः पुस्तके  
हस्तः । किम् तव नयनयोः तृणानि सन्ति ?

सूर्यः अपाकारा भस्मते । चन्द्रः अपि अपाकारा भस्मते ।

मृगाः तदाकस्य तटे जलम् पिबन्ति । मनुष्याः गृहेषु वलन्ति,  
मृगाः रजगाः गृहेषु, सपाः च विलेख । दग्धं पृतम् भवति ।  
कालियुगं लम्बं बलम् सन्ति ।

### अभ्यास

१. नये शब्दः - परजराक - पिजरा

गीड - खोलला

मीन - मछली

हस्तः - (बैठ) हैं

जान - जाना  
तव - तेरा

हिम - बर्फ

लान्ति - (बैठ) हैं

इसदृश - जन्मा

विकल - खिलना

२. निम्नलिखित के लिये :-

वृक्ष

वृक्षयोः

वृक्षेषु

नर

नरयोः

नरेषु

पाल

पालयोः

पालेषु

३. परका नाम :- (क), शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करिये :-

विलेख, गीष्म, विकलान्ति, हिमजलम्, हस्तयोः ।

(ख), पुनर्वाक्य का लिये :-

१. शिव हिमालय पर रहता है । २. क्या पक्षी पालनों में रहते हैं ?

हैं ? ३. मेरे पिता जी अफगानिस्तान में रहते हैं । ४. परजाब, पदरों के लोग

संसार में फैले हैं । ५. २. पक्षी पार्थिव लड़के पर चलते हैं ।

गानों में लोग मज्जा करते हैं ।







द्वितीयः पाठः

(संभाषण, प्रथम)

रामः

मित्र! तव विद्यालयः कुत्र स्थितिः?

मित्रः - मित्र २याम! मम विद्यालयः ग्रामे स्थितिः । ग्रामे तत्र प्रवेशद्वारं पश्चात् गच्छामि । मम सहोदरः अपि तत्र एव पठति यत्र ग्रामे पठामि ।

२यामः - गो राम! त्वम् कस्मिन् विद्यालये कथम् गच्छसि? पाठ्यक्रमं यान्ति का?

रामः - हे २याम! यथा त्वम् पाठ्यक्रमं एव विद्यालये गच्छसि, तथा एव ग्रामे अपि पाठ्यक्रमं एव विद्यालये गच्छामि । परन्तु मम सहोदरः यान्ति एव विद्यालये गच्छति । गो २याम! त्वम् कदा विद्यालये गच्छसि?

२यामः - मित्र! ग्रामे प्रातः विद्यालये गच्छामि । मध्याह्ने यदा चण्डालः भवति तदा ग्रामे गृहं प्रति गच्छामि । पुष्पाग्रं ग्रामं पश्चात् विद्यालये एव गच्छामि । (यस्यतः लोकादः देवदत्तः अपि गच्छति) ।

रामः २यामः च - हे बालाः! किम् भूयः विद्यालये गच्छथ?

बालाः - गो बाला! वयम् अपि कठोरतया न गच्छामः । ग्रामात् विद्यालये अपि व्यवहारः स्थितिः । वयम् तु कौटुम्बिके कार्ये रोजं गच्छामः ।

\* P.T.O.

प्रथमः

१. तस्य शब्दः -	कुत्र - कहाँ	कदा - कब
	यत्र - जहाँ	यदा - जब
	तत्र - वहाँ	तदा - तब
	कथं - कैसे	पुष्पाग्र - पुष्पाग्र
	यथा - जैसे	अपि - भी
	तथा - वैसे	ग्रामात् - ग्रामात्
		ग्रामात् - ग्रामात्
		ग्रामात् - ग्रामात्

२. लोकात् किं लिखे

हे राम! हे रामा! हे रामाः ।  
गो बाल! गो बाला! गो बालाः ।

३. वाक्ये का क्रियाः - (क) नाम्नां प्रयोगः - अपि, कथम्, तदा, यथा, कुत्र, पुष्पाग्र ।

(ख) प्रयोगः - जब रातकाळ आजाय हे तो जल हेडा हो जाता हे ।  
ग्रामात् पुष्पाग्रा मे आवत है । तब दो तीन पाठों को पढ़ते हैं । जब राम पढ़ता है तो २याम तबिले ही आता है ।



जहमान् न मन् न यथा न न न

जाबन् न यन् न राजाश्रमं जालम् ।

तहमान् न तन् न तथा न तदा न न न

तानन् न तन् न विष्णुनशाद उपात्त ॥



त्रयविंशतिः पृष्ठः

लोक लकार

रामः पाठम् पठत ।

सा पत्रम् लिखत

माह्वः शोभतः च गामम् गच्छतम् ।

ता पाठम् पठतम् पत्रं च लिखतम् ।

पुत्रवाः पितरम् खादन्त वृक्षमाः च जलम् पिबन्त ।

ताः विद्यालयम् गच्छन्त पाठम् च स्मरन्त ।

सत्यम् वद , अममं चर १ पाठम् स्मर ।

युवाम् गृहम् गच्छतम् जनकम् च नमस्कृतम् ।

युयम् अत्र गच्छत उपदेशम् च शीकृष्यत ।

हे चाराः ! युयम् पाप्यतम् न हस्त ।

हे शिष्याः ! युयम् कदा अपि अनृतम् न वदत ।

किम् अहम् अयम् गृहम् गच्छान् पाठम्

वा पठान् ?

गच्छान् ?

गुरुवर ! किम् अहम् गन्तः गच्छामि ?

किम् आवाम् भोजनम् खादाम ?

किम् वयम् अपि यत्रम् पर्याम ?

लोकाः सुरवन् वसन्त भद्राणि च पश्यन्त ।

दशरथ नाम्नाकाः चामकाः भवन्त ।

युयम् पुष्पाणाम् गन्धम् न जिह्वत ।

पर्याम

१. नपुंसकः - कदा कदा (हे) हर - चरागा

अनृतम् शूढ (आ) जिह्व सुंयगा

गन्तः गन्तः वा - धा

भद्र कल्पाना

२. लभ्यते कतिपयः - पठत पठाम् पठन्त

पठ पठाम् पठत

पठान् पठाव पठाम

३. पर मा कामः - (कि) पुत्रवत् काजयः - हे बालका ! अपि विद्यालयं गच्छतम् ।

२. लोकार् क लोव लोवा लोव लोव ३. वन्दर वृक्षा पर वर ४. पाल खाद्यं । ४. हर क म गजं अपर मार गन्त । ५. कृपा इम

गयाज नगर का न जाय क. २. व दाना गुरु का नमस्कार करे ।

(५) मन्त्रे स्थापना का शक्ति काजयः २- किम् अहम् पाठम् पठत ?

२ युयम् गृहम् गच्छत ३ लः युयम् न वदतम् ।

४. हे चाराः ! युयम् कदा अपि अनृतम् न वदतम् ।







ॐ कण्ठ स्तः । रत्ना कमला पालिते इति पात्र विमला  
उभे पात्रादयम् कन्पायम् । तत्र पात्रशालाम् गच्छतः । तत्र  
पात्रशालायाम् कन्पायः वृक्षाणाम् काशाल निजपात्रान् स्मरन्ति ।  
हन्त्यायाम् कमला विमला च काशालयम् गच्छन्तीति  
काशालयम् गच्छतः । तत्र खलतः पावतः च । काशालः  
तत्रा ~~काशाल~~ सखम् गच्छति । तत्र ~~काशाल~~ शालकाः शिलाल  
उपावश्य कन्पायाम् काशालम् परपात्रे । काशाला तालाम्  
पात्रान्दम् सखम् च गच्छति ।

1,422,116

2. निम्नलिखित के नियम :- लता शब्द (द्विपञ्चरान्त) का  
वर्ण व्याकरण पाठ्यपुस्तक में दालिख है।

१. जड़ों नाम - लता, पाटला नाम, क-पातः, माडाम.  
 (२) २५७५५ का नाम है - १. जड़ों नाम, २. पाटला नाम, ३. क-पातः, ४. माडाम.  
 २. जालक वृक्षा का नाम है - १. जालक, २. पाटला, ३. क-पातः, ४. माडाम.  
 ३. उष्ण में जालक पर मारे मंडराते हैं। ४. राम जालक  
 नाम है। ५. जालक का लता है। ६. जालक नाम पाटला का  
 नाम है। ७. जालक नाम पाटला का नाम है।















१६वा १५१०१

विशेषात् अपाकाशे तारकाः दायन्ते । इत्येतत्

कृपया पुःखान्ति नश्यन्ति चिन्तयन्ति । शान्तिं

वर्धयन्ति न मयूराः नृपान्ति । गीष्मं सारवराणाम्

जालम् शब्धयति । जनकः पुत्रभ्यः कुरुयति । मातुकाः

पौरभ्यः त्रह्णन्ति, सज्जगः दुर्जनभ्यः त्रह्णन्ति ।

कन्ये वलत्राण्य सारयति । जनः गात्राण्य शूरयन्ति, मरुः

सत्येन शूरयति । नृपाः दुष्टान् न क्षामयन्ति ।

(N. Para.) मूयम कार्यकालं न मुह्यति । अपाजिह्वत, उच्चा

गाम्पाय वलत्रे शोभाम् च पर्यायम् । अपावाम् शोभः

नामः त्रह्णति । वयम् न कदापि लुभयाम । हे पुत्र !

त्वम् न कदापि लुभय, त्वम् पुःखल्य कारणम्

भवति । किम् महम् पापान् क्षामयान् ? हे राम !

पञ्चागम् पुःखान्ति नश्यन्ति, पञ्चाः च त्रह्णन्ति ।

किम् पुनम् सारिवापाः तरे भोक्तायः ?

१. नमः शब्धः :- अपाकाशे . त्रह्ण . - डरान्  
दिव् (दीप्ति) - समकता . सिन् (सिन्) - सारान्  
कश - नष्ट होना . क्षम् (क्षाम्) - क्षाम करान्  
शम् (शाम्) शान्त होना . पुष - पलन होना  
शुष - लोभ करान्

२. लक्षणम् न लिखे :- दीपयति दीपयति दीपयति  
दीपयति दीपयति दीपयति  
दीपयति दीपयति दीपयति

३. घर का काम :-  
(क). शिखर द्वाग का शूत करे :-  
१. विशुधाम् तारकाणि २. सज्जगः दुर्जनभ्यः  
मिता कुरुयति । ३. मरुः शूरयति ।  
४. नृपाः न क्षामयन्ति ।

(ख). भुगवत् का विधे :-  
१. तुम् सदा कहां प्रभुते हो २. मैं उच्चा का शोभा  
का देख कर पलन होता है । ३. तू हर रोज मूयम  
नहीं सीता । ४. हे मातुका किन्तु घर का पन करे ।  
५. तारे शत का वयमकत है पतः काल त्रह्ण हो जाते



1 जन्माष्टमा का संदेश ।

( ~~संस्कृत~~ )

जन्म ल लेन मात्र से कोई मनुष्य महापुरुष नहीं बन सकता, और किसी भी मनुष्य के साधारण कृत्यों के साधारण पर उस का जन्मास्तव नहीं मनाया जाता । किसी भी पुरुष के अस्वास्थ्य तथा असाधारण कार्य कृत्यों से प्रभावित हो कर ही जगता उस का महापुरुष का उपाधि देती है तथा उसे इन महान् कार्यों का स्मृत का स्थायी बनाम रखने के लिये जन्मास्तवपद भिन्न भिन्न पदों का मनाया करता है । अतः केवल जगत् का महान् तथा अमर उपाधि देकर हिन्दू जाति का परिवर्तन किया है । 3-हो न हमारा सिरकात तथा लम्बता को लम्बित किया है । यह उन का महान् देन है । इस के अर्थ से हिन्दू जाति कभी भक्त नहीं हो सकती । यदि कारणा है कि समस्त महापुरुषों में उन का सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ है और उन का स्मृत में हम जन्माष्टमा नाम का पद मनाया है ।

हमारे सम्भरने भगवान् कृष्ण के दो रूप हैं । एक रूप तो वे हैं जो कि हिन्दू का शोककालीन तथा रातकालीन काव्य में आने लगने रखा है । इन काव्यों में केवल साधारण पुरा तथा सर्वोच्च रूप का ही अपनी वाचता तथा कृतियों में ध्यान दिया है । कृष्ण का छिटने के चल-पलना, भक्तरन मोद के लिये हठ करना, भुव नि देह का लेपन कर लेना, शरीर का झूल-झुल कर लेना आदि उनके वाच्य काल का कांडीय सूराली मोद काव्य में का बहुत भाई है । पुनः जब वह कुद्वेष्ट हो तो और चाना वसी लजाना, आप आलका का साथ चलना भक्तरन पुराना, समान में रंगान करता है आपसों के कपड़े उठा कर कदम के गुह्य पर-पट कर पत्ती में छुप जाना आदि कांडीयों का प्रचुर है । काव्यों में वह सुन्दर रंग से किया है । जवानों में आपसों के साथ पैर, रोपों के साथ कांडीय आपसों तथा वज्रवातों और यशोदा आदि का वरु वरुण मिलता है । आपसों आदि के पैर के वरानों का काव्य तो मोदों का उल्लाखन तथा कोर आम है । कोर अंगार रंग के काव्यों में रंगों तथा कृष्णों के पैर का आडो ल कर अपना शरीर के काव्यताओं का रचना का है । कृष्ण का इस रंग का साधारणता ही आपसों का कृष्ण रूप का



## लडः लकार

रामः वनम् अगच्छत्

रामः लक्ष्मणः च वनम् अगच्छताम् ।

सीता रामः लक्ष्मणः च वनम् अगच्छन् ।

रावणः लङ्कायाम् अवलत् मारीचः अपि तत्र अवलत् ।

तौ वनम् अप्यावताम् । सीता कुटीरे आसीत् ।

रामः लक्ष्मणः च कुटीरे न आस्ताम् । रावणः

सतीताम् अहरत् । रामः अपि अमुह्यत् लक्ष्मणः

अपि अमुह्यत् । वनस्य जीवाः रवणाः च व्याकुलाः

अभवन् । सजीवित्य अमात्यः सीतायाः अन्वेषणाय

समुद्रम् अतरत् । सः अशोकवाल्मीक्याम् सीताम्

अपश्यत् । सीता तम् यदा अपश्यत् तदा सा

अत्रत्यत् । सः सीताम् रामस्य अन्वेषकम्

अपि ज्ञातुम् अग्रतः । सीतायाः गमनम् अपश्यत् ।

पवनसुतः कालान् अग्रतः ३ उद्यानम् च अगच्छत् ।

रावणः पवनसुताय अमुह्यत् ।

किम् त्वम् रामस्य कथाम् अपठः ? अहम्

तु रामस्य कथाम् अपठम् । वयम् तु रामलीलां

अपि अपठाम । युवाम् रामस्य चित्रम् अलखताम्

आवाम् स अपाठयाम् अपठयाम ।

## अभ्यास

१. नये शब्दः - कुटीर - कुटिया (दा) वच्छ - दना

अपि ज्ञातुम् - अंगूठी (तृ) त्र - तरेण

पवनसुतः - हनुमान्

२. समाने के लिये - अगच्छत् अगच्छताम् अगच्छन्

अगच्छः अगच्छताम् अगच्छत

अगच्छन् अगच्छन् अगच्छाम

३. पर का काम :- (क) निम्न स्थानों का पूरत करत :-

१. सीता लक्ष्मणः च रामेण - वनम् - २. लङ्कायाम्

रावणाः - ३. रावणः सीताम् - ४. किम् - पाठम्

अपठः । वृद्धात् - अपठत् ।

(र) हम दोनों ने पाठ किया । गोपाल ने रवाना रवाया पर पाठा

पिया । कन्यायें खेलकूद मदान में खेली । हम ने राजा का

अपेक्षा में तारा का देखा । क्या तुम ने रामायण को पढ़ा

३ । राम एक नाम शाल राजा था ।







(इकारान्त पुल्लिङ्ग, लुङादिजण) → गोश्रमः

इयः गोश्रम गोश्रम गोश्रम गोश्रम गोश्रम  
 ऋषयः मुनयः यतयः च वसन्ति । तत्र दौ गोश्रम  
 गोश्रम स्तः गोश्रम । तत्र रुक्मः गोश्रम गोश्रम गोश्रम  
 दौ कपी वसतः । तौ मुनीन न तु दतः । वृक्षेषु  
 पुष्पाणि सन्ति । पुष्पेषु उपलयः गुह्यजान्ति । यदा ऋषयः  
 वसन्ति इच्छन्ति तदा कपीः कलानि क्षिपति । मुनयः  
 पाणिभ्याम् रुक्मं जलम् पृच्छन्ति । शिष्याः जलम्  
 पादपात्रे सज्जयन्ति गोश्रमम् च गोश्रमम् सज्जयन्ति ।  
 गोश्रमं नृपतयः धार्मिकः अकुण्ठम् पृच्छन्ति । ऋषीणां  
 चित्तम् शान्तम् भवति । तत्र शिष्याः उपदेशान् उपदिशन्ति  
 गोश्रमः । हरिः संसारम् सूजति । सुखम् हरिम्  
 भजत । गोश्रमं आहारम् दिशत । तस्य भक्तानाम् व्याख्यः  
 भजन्ति । जीवान् न तु दत । गोश्रमं इत्येतत् । हरः  
 भक्तानाम् व्याख्यः भजन्ति ।

गोश्रम गोश्रम कदापि कालः न भवति ।  
 ऋषयः कावचं निधाय लान्ति । मुनीनाम् गोश्रमः  
 शुचिः भवति । भूपतीनाम् गोश्रमं तथा गोश्रमः न  
 भवति यथा मुनीनाम् । ऋषीणां च । त  
 रुक्मः गोश्रमम् इति दीप्यन्ति । संसारम्  
 गोश्रमम् च हरन्ति । तत्र गोश्रमं च विन्दन्ति ।

गोश्रमम्

१. नाम शब्दः -

हयः - फल (गुजरी दुई)	तु - तंग करना
माति - संभाला	(इय) रुक्म - चादना
गिरि - पर्वत	(गिरि) निम्ब - लोपना
काय - बन्द	(लिङ्ग) लिङ्ग - लोचना
रुक्म - रुक्म	नृज - उत्पन्न करना
गोश्रम - शत्रु	क्षिप - लोचना
कालः - काल	(पृष्ठ) पृष्ठ - छेदना
गोश्रम - निर्वण	(विष्ट) विष्ट - पाना
गोश्रम - गोश्रम	

२. (गोश्रम) के लिये - (क) हरि शब्द के रूप व्याकरण परीक्षा के लिये

३. घर का काम -

(क) शब्दों को प्रयोग वाक्यों में काजिये -

पाणिभ्याम्, उपलयः, गोश्रम, मुनीनाम्, हरम् ।

(क) अनुवाद काजिये -

१. गोश्रम फलों पर संसार है और रुक्म का फल है । २. बन्द

पर्वतों पर फलों का स्वाद है और पर्वत है । ३. क्या (मुमुक्षु) ने

गोश्रमों को खाया है ? ४. क्या लोग लम्बा (पृष्ठ) के सुत्रों को खाते

हैं ? ५. क्या हमने गोश्रम के वृक्षों को जल से लोचना ?



सकत है। भारत को आन्ध्र के तर ओर सेरवा, विशेष कर मध्य  
 लाज कबला के इस रूप में ही श्रद्धा तथा आस्था रखत है और  
 इसी की कल्पना कर समझत है।

भगवान् कृष्ण का दूसरा रूप वह है जो महाभारत के,  
 रत्नावली भगवान् वद वारास में है और सामान्य रखत है। यही  
 कृष्ण एक सच्चा भाषा, राजनीतिज्ञ तथा धार्मिक नेता के रूप  
 में हमारे सामने आत है। वह राज्य तथा धर्म को पक्ष ल कर शांति  
 पाल, जरासन्ध तथा केशीद दुरा-पार तथा पापा शालीका को  
 संहार करत है। और जब धर्म कात्र कृष्ण का युद्ध भूमि में  
 माह जलत है, कर श्रद्धा करन से इनकार कर देत है, तथा हीमालय  
 को उ कर रथ से नीचे उतर जात है तो भगवान् कृष्ण उन्हें कर्म  
 भाग को सन्ध्या तथा कल्पारण करी उपदेश दे कर उन के माह  
 को दूर करत है और उन को युद्ध कालिय तरसा करत है। यही  
 कृष्ण एक सच्चा भाषा राज करन में पकट होत है।

भगवान् कृष्ण के इन दोनों रूपों में आकाश पाताल  
 को अन्तर है। कदा साधारण कृष्ण और कदा जीप व-धर्म  
 के चार चरण वाला भगवान्। इस महान् अन्तर का उत्तर दारार  
 हिन्दू के कावरा तथा आन्ध्र वरवाले भक्तों पर है, जो भगवान् कृष्ण  
 को साधारण के पद से खीन कर एक चरित्र तथा काविक भगवान्  
 के स्थान पर ले आत है। भगवान् कृष्ण का वे जिस रूप में  
 देवत है, वह बहुत निकट रूप है। जन साधारण तथा समाज  
 का दृष्टि से यह रूप कल्पारण पद नहीं। एक साधारण ध्यातु  
 यह समझने में भी असमर्थ है, कि कृष्ण तथा गायकों काविक  
 संबंध भी। शायद भक्त तथा काव लाज ही इस बात का समझत  
 होत।

भगवान् कृष्ण का दूसरा रूप ही सर्वोत्कृष्ट तथा भगवान् -  
 काव है। जीता का अर्थ सद्गुरु भगवान् कृष्ण के इस रूप की  
 उपेक्षा है। जीता अनकाले भावना को एक कोष है। इस महान्  
 जीप का सम्मान केवल भारत वालों में ही नहीं, अपितु विश्व  
 के सभी देश तथा जातियों में बिखा है। यही कारण है कि  
 जीता का अनुवाद समस्त भर को मशीन सचय तथा उन्नत भाषा  
 में हो चुका है। किन्तु जो भारत जात को अनुवाद के  
 जिक में उठा कर उन्नत के विवर पर बिना दन के लिख शक्त जीता  
 के उपदेश में पुनर् भाषा में समझत है। जीता को सब ही उन्नत



(पुराणे जग, सदा सत)

॥ चाराः चण्डा चारयान्ते । नृपतयः चारान् चारयान्ते  
 दण्डयान्ते च । अतः मह्यं कथयामि मत् चारयान्ते  
 राजपुत्रवेद्यः मयम् भवति । हे बालकाः ! यूयम् किम्  
 ज्ञायथ ? हे अपरिचयः यूयम् भोजनम् भक्षयत । हे  
 मुनयः यूयम् यमम् चिन्तयत । हे हे ! त्वम् ह्यः  
 किम् अभक्षयः । हे क्व ! किम् त्वम् काण्डम् प्रक्षयः ।  
 कावः कालदालः ~~सुखम्~~ <sup>शकुन्तलम्</sup> अप्रचयत भवति : न उतम्  
 रामचरितम् । अपहम् वृद्धान् अपूजयाम् । युवाम् यमम्  
 अपालयतम् । नरपतयः प्रजाः पालयन्ति । त्वम् किम् बालका ?

सीता पादम् पाल्वा पत्रम् मालयत । गोपालः भोजनम्  
 भक्षयित्वा जलम् आपिबत । शिवाम् गिरिम् गत्वा कपिभ्यः  
 भोजनम् अपचक्षत् । देवदहः गुरुम् गत्वा पादम् स्नानी  
 मुदः कथाम् कथयित्वा लण्डलान् चरति । मयूराः नरित्वा  
 कैकारवम् कुर्वन्ति । युवाम् स्नात्वा ह्येव अपूजयतम् !  
 वयम् कथाम् श्रुत्वा लब्धवामः । रावः रावणम् जित्वा हत्वा  
 न अपाह्वयाम् सीतया सह अपाज्यन्त ।

शिक्येण जन्मः पितरः । ~~बालकम् भोजनम् स्वादितम्~~ !  
 शकुन्तलया ~~सम्~~ पादः पितरः । सीतया पुलकम् पितरम् !  
 मुनयः पाशमम् जताः । गोपालेन किम् मुक्तम् । मया  
 जीतम् मुक्तम् । रावणेन सीता हता । रावणः रामेण हतः ।  
 राक्षसाः रणे मृताः । बालकः भोजनम् स्वादितम् जलम् च  
 पीतम् । हेरः कृपया सज्जगः लब्धः दुर्जनाः च लब्धः ।  
 शीन्ताः श्रुत्वाः स्नात्वा कलान्ते अप्रमक्षयम् ।

अपचक्षत्

८. नये शब्दः - राजपुत्र - लिपिह  
 कैकारव - मारका शक्ति  
 (चर) चार - चरान्  
 कथ - कथन  
 भक्ष - खान  
 चिन्त - चिन्तनकर

युव - युवा करण  
 लण्डल - लण्डल

२. समाने के लिये - चारपाद, चारपद, चारयान्ते  
 चारपाद, चारयय, चारयय  
 चारयामि, चारयाम, चारयामः



गण	हल्का = हवा	हल = हू
पठ	गहका	गतः
चल	पहलका	पहलः
नृत	चललका	चललतः
चर	नहलका	नहलतः
	गहारयलका	गहारतः

(१)

घर का काम :-

(क), शब्दों का वाच्यता में प्रयोग का विषय :-

पहलका, गहलका, रहललका, हलका, कथयलका, गहारयलका

(ख), प्रयोग का विषय :-

1. प्रयोगक कालका का गिनती है ५. २. कृषक हल चलाते हैं और गहलका रवा कर ठंडा चलते पीते हैं।
3. पौड चाल का रवा कर चलता है।
4. पहलका के चारों का पीला पौर ३-४ टण्ड दिया।
5. गहलका लोका प्रयोग का चल गये हैं।
6. कथ हूय गहारयलका का वाच्यता में विज्ञान करत है।



# संख्या

- १- एकः देवः सर्वभूतेषु गूढः ।
- २- द्वा पक्षौ मासस्य भवतः । कृष्ण पक्षः च शक्ल पक्षः च ।
- ३- त्रयः लोकाः भवन्ति । पृथिवी लोकः पाताल लोकः स्वर्गलोकः ।
- ४- चत्वारः वेदाः सन्ति । ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदः च ।
- ५- पञ्च यज्ञाः गृह्यस्य भवन्ति । ब्रह्मयज्ञः, देवयज्ञः, पितृयज्ञः, भूतयज्ञः, ज्ञातृयज्ञः च ।
- ६- षड् ऋतवः भारत वर्षे भवन्ति । ग्रीष्मः, वर्षाः, शरत्, हिमन्तः, शिशिरः, वसन्तः च ।
- ७- सप्त काण्डाणि रामायणस्य सन्ति, बालकाण्डम्, अयोध्याकाण्डम्, अरण्यकाण्डम्, किष्किन्ध्याकाण्डम्, सन्दरकाण्डम्, युद्धकाण्डम्, उत्तरकाण्डम् ।
- ८- अष्ट अष्टाध्यायीनामव्याकरणान्यस्य अष्टाध्यायाः सन्ति ।
- ९- नव रत्नाणि सन्ति ।
- १०- दश अवताराः विष्णोः भवन्ति ।  
मत्स्यः, कूर्मः, वराहश्च, नरसिंहश्च नामनः ।  
रामा रामश्च कृष्णश्च, बुद्धः कल्की च ते दश ॥
- ११- एकादश पक्षिकाः उपनिषदः सन्ति । ईश-कण-कठ-परम-मुण्डक-माण्डूक्य-तैत्तिरीय-एतरेय-छान्दोग्य-बृहदारण्यक-अमृतारवताराः इति ।
- १२- द्वादश संवत्सरस्य मालाः भवन्ति - चित्रः, वैशाख, ज्येष्ठः, आषाढः, श्रावणः, भाद्रपदः, पौषिकः, कार्तिकः, मार्गशीर्षः, तीर्थः, माघः, फाल्गुणः च ।
- १३- त्रयोदश त्रयश्च दश च त्रयोदश भवन्ति ।
- १४- चतुर्दश विद्याः भवन्ति । षड् वेदाङ्गानि, चत्वारः वेदाः, श्रीमद्भागवतम्, दशगण, भाष्यदशगण, पुराणम्, अमृतारवतम् च ।
- १५- पञ्चदश
- १६- षोडश
- १७- सप्तदश
- १८- अष्टादश
- १९- नवदश, अत्रविंशतः, एकविंशतः
- २०- विंशतः



मल्ल	मल्ल - ल	मल्ल - ल
मल्ल	मल्ल	मल्ल
पल्ल	पल्ल	पल्ल
मल्ल	मल्ल	मल्ल
मल्ल	मल्ल	मल्ल
मल्ल	मल्ल	मल्ल
मल्ल	मल्ल	मल्ल

जा,

जर का काम :-

(क) शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिये :-

पल्ल, मल्ल, मल्ल, मल्ल, मल्ल, मल्ल, मल्ल

(ख) अनुवाद कीजिये :-

1. पल्ल का वाक्यों में प्रयोग कीजिये। 2. कृपया इस वाक्य में मल्ल का प्रयोग कीजिये।
3. पल्ल का वाक्यों में प्रयोग कीजिये।
4. पल्ल का वाक्यों में प्रयोग कीजिये।
5. पल्ल का वाक्यों में प्रयोग कीजिये।
6. पल्ल का वाक्यों में प्रयोग कीजिये।



संख्या

- २- एकः देवः सर्वभूतेषु गूढः ।
- २- द्वा पक्षौ मालस्य भवतः । कृष्ण पक्षः च शुक्ल पक्षः च ।
- ३- त्रयः लोकाः भवन्ति । पृथिवी लोकः पाताल लोकः स्वर्गलोकः ।
- ४- चत्वारः वेदाः सन्ति । ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदः च ।
- ५- पञ्च यज्ञाः गृहस्थस्य भवन्ति । ब्रह्मयज्ञः, देवयज्ञः, पितृयज्ञः, भूतयज्ञः, आत्मीययज्ञः च ।
- ६- षड् ऋतवः भारते वर्तन्ते भवन्ति । ग्रीष्मः, वर्षाः, शरत्, हिमन्तः, शिशिरः, वसन्तः च ।
- ७- सप्त काण्डाणि रामायणस्य सन्ति, बालकाण्डम्, अयोध्याकाण्डम्, अरण्यकाण्डम्, किष्किन्ध्याकाण्डम्, मन्दरकाण्डम्, युद्धकाण्डम्, उत्तरकाण्डम् ।
- ८- अष्ट अष्टाध्यायीनामव्याकरणान्यस्य अष्टाध्यायाः सन्ति ।
- ९- नव रत्नाणि सन्ति ।
- १०- दश अवताराः विष्णोः भवन्ति ।  
मत्स्यः, कूर्मो वराहश्च नरसिंहोऽथ वामनः ।  
रामो रामश्च कृष्णश्च, बल्लभः कल्की च ते दश ॥
- ११- एकादश पालिकाः उपनिषदः सन्ति । ११- कण - कठ - पञ्च-मुण्डक-माण्डूक्य - तीतरीय - ऐतरेय - छान्दोग्य - बृहदारण्यक - श्वेताश्वताराः इति ।
- १२- द्वादश संवत्सरस्य मालाः भवन्ति - ११- चित्रः, वैशाख, ज्येष्ठः, आषाढः, श्रावणः, भाद्रपदः, आश्विनः, कार्तिकः, मार्गशीर्षः, पौषः, माघः, फाल्गुणः च ।
- १३- त्रयोदश - १३- चित्रश्च दश च त्रयोदश भवन्ति ।
- १४- चतुर्दश विद्याः भवन्ति । षट् वेदाङ्गानि, चत्वारः वेदाः, सांख्यिक - दर्शनम्, - साधुदर्शनम्, पुराणम्, अमृतशास्त्रम् च ।
- १५- पञ्चदश
- १६- षोडश
- १७- सप्तदश
- १८- अष्टादश
- १९- नवदश, अत्रविंशतिः, सकोटविंशति
- २०- दशतिः



२५२ पान

पर का काग :-  $\frac{200}{100}$  से  $\frac{200}{100}$  तक  
(वि)  $\frac{1}{2}$  से  $\frac{200}{100}$  तक विवरण :-

१. काग का काग : भवानी ?
२. भारत वर्ष काग से भवानी ?
३. काग का काग : उपाधि वद : काग से भवानी ?
४. भवानी काग से भवानी ?



# ( लृट् लकार, उकारान्त पुल्लिङ्ग )

सायवः परापकाराय सदा चनम् दाहयन्ति । गुरवः  
 चर्मम् दाहयन्ति । शिष्याः तरुणाम् छायात् पादम्  
 दाहयन्ति । शिशुः कीडादात्र ~~कीडवः~~ कीडिष्यतः ।  
 शम्भोः कृपया पूजाः सुखम् दाहयन्ति । प्रहम् फण्डम्  
 न स्वाहयामि । गोमायवः कुवारिन् दाहयन्ति । वायोः  
 वज्रम् वृक्षाणाम् पत्राणि कलानि च पातयन्ति । पुमान्  
 वयम् शत्रून् कदा जहयामः ? सायुगम् रक्षाय पापानाम्  
 च विनाशाय कृष्णः सखावधायि ।

पृथ्वा पृथ्वा मृषाः मायन्ति । मन्दम् वात  
 वायुः । लम्भवतः जलस्य विन्दवः पातयन्ति । भारत  
 वर्षे षड् ऋतवः भवन्ति । पृथ्वाम् मृत्वा मृत्तुयाम् मृत्तून्  
 वणायययवः । ग्रीष्मे भागः विरषाः सरावराणाम् जलम्  
 शोषयति । वर्षासि पृथ्वा मृषाः मायन्ति, मयूराः  
 नातयन्ति, जलविन्दवः च पातयन्ति । शरतकाले कमलानि  
 तडागेषु विकसितयन्ति । हेमन्त शालयः माययन्ति । शिशिर  
 भागः मातयः सचिकरः माययति । वसन्ते देवाः लपुष्याः  
 वायः सृजन्ति, दिवसाः च रम्याः माययन्ति । ग्रीष्मे  
 श्वः पादरातां गोमययामि । वयम् तत्र सव स्वाहयामः ।  
 गुरुः उपदेशम् दाहयति । वयम् चर्मम् दाहयामः । वृषम्  
 जलम् पाहयय ।

## पृथ्वा

१ - नयैरान्द :- तृत् - छाया वृक्षा वा - चलात् (हवाका)  
 शिशु - वय्या शा - जातना  
 प्लाण्ड - प्याज पा - पात्र  
 गोमाय - गोदड ह्या - हिरण्य  
 कुवारि - ककड़ी

२. लम्भो के लिये :- विमान मायया लृट् लकार के लिये  
 लिये व्याकरण पाठशाला दाहयति ।

३. लृट् का काम :- (२). पृथ्वा के उद्देश्य :-

१. सायवः परापकाराय किम् दाहयन्ति ?



2. कृष्णः किम् अर्थम् ?
3. भारत वर्ष की संरचना क्या है ?
4. मधुराः क्या गौरवार्थ ?
5. किम् अर्थम् जनन पालनम् ?

(रव) संस्कृत में अनुवाद करो :-

1. मैं आज ही घर जा कर पुस्तक को पढ़ूँगा ।
2. दुश्मन की हत्या हो जायेगी तब ही रुकने देंगे ।
3. तुम दोनों घर चले जाओगे ?
4. क्या बालक वृद्धों को छाया में बैठेगा ?
5. आज आकाश में बाल धूमरेगा ।
6. देश के लोक शत्रुओं को जानेंगे ।
7. मैं वहाँ को पहुँच कर पाठ्य पढ़ूँगा ।



पद्याः

११ वेद रामामणे चैव पुराणे भारत तथा ।  
 १२ पादौ मध्ये तथा चान्तौ हरेः सर्वत्र गीयते ॥ २ ॥  
 सर्ववेदमयो गीता सर्वचर्ममयो मनुः ।  
 सर्वतीर्थमयो गङ्गा सर्वदेवमयो हारिः ॥ २ ॥  
 सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम् ।  
 अतद्विद्यात समासेन लक्षणं सुरवदःखयोः ॥ ३ ॥  
 ताराणां भूषणं चन्द्रो नारीणाम् भूषणं पतिः ।  
 पृथिव्या भूषणं राजा विद्या सर्वस्य भूषणम् ॥ ४ ॥  
 विद्या मित्रं प्रकालेषु माता मित्रं गृहेषु च ।  
 व्याप्यतर-मोक्षाय मित्रं चर्मो मित्रं मृतस्य च ॥ ५ ॥  
 सपः कूरः खलः कूरः सपात कूरतरः खलः ।  
 मन्त्रोपाधिवशः सर्वः खलः केन विनामते ॥ ६ ॥  
 कोमलाङ्गं स्वरा रूपम् नारीरूपं पतिवतम् ।  
 विद्या रूपं कुरूपपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम् ॥ ७ ॥  
~~स जीवति जगत् प्रलय चर्मो प्रलय च जीवति ।~~  
~~जन्म नमि विहीनस्य जीवतं विष्णुमोजनम् ॥ ८ ॥~~  
 सुरवस्थानन्तरं दुःखं दुःखस्थानन्तरं सुखम् ।  
 सुरवदुःखम् मनुष्याणां प्रकृतं पादवतम् ॥ ८ ॥

११२५७

२. नपे शब्दः - समासेन - संलुपित  
 प्रकालेषु - विदेशे  
 कूर - कठोर  
 मन्त्रोपाधिवशम् - यद्व्याप्तम्

२. सामान्ययोः - चान्त = च + अन्त  
 व्याप्यतर-मोक्षाय = व्याप्यतर-मोक्ष + व्याप्य  
 सुरवस्थानन्तरं = सुरवस्थान + अन्तरम्  
 दुःखस्थानान्तरम् = दुःखस्थान + अन्तरम्

३. पद को नामः - (क) - पांके तथा १११६३१ रत्नाक को क०६८५  
 नरी । (ख) - १११६३१ तथा ५११६३१ को १११६३१ ।  
 (ग) - १११६३१ तथा ५११६३१ को १११६३१ ।







( विष्णु लि ३० )

१२७२१-भा३:

मनुष्यः इन्द्रम मजत । देवान् अपचयत । काश्याजभ्यः  
 दाक्षिणाम् दानम् च यच्छेत् । गुरुन नमते । अपाचायान्  
 अपचयत । निक्षम शुद्धवक्षः पसन्नाचितः च स्यात् ।  
 सर्वदा निश्चिन्तः, निमग्नः, आत्मिकः, आर्त्तिकः नमः च  
 स्यात् । सत्यम् वदेत् । अणूतम् न वदेत् । परचणम्  
 न भोगिलषेत् । अण्यदाधानं न कथयेत् ।

राष्ट्रं समाः नगरिकाः भवेयुः । राज्यस्य अपाशाः  
 पालयेयुः । स्वकर्तव्यानि पालयेयुः । निबलानाम् दानानाम्  
 च चानानि न हरयुः । ॥ राज्यस्य रक्षाय स्वपापान् प्राप  
 उत्सृजयुः । राज्यमाच्यकारणः नागरिकाणाम् हितम् इच्छयुः ।  
 लोकानाम् सौख्यकारणम् अपाच्यकारणं रक्षयुः । तौ  
 राजपुरुषौ चौरभ्यः नगरम् रक्षताम् । स्त्रीपुरुषौ सुरवेन  
 वसेताम् । भस्मयितव्यम् ।

त्वम् देवताभ्यः अपहृत्वा गुरुभ्यः अपात्ताभ्यः च अपहृत्वा  
 भोजनम् न भक्षयः । वस्त्रपूतम् जलम् पिबः । गुरुम्  
 अपनत्वा पाठम् न पठः । हे नागरिकाः ! यूयम् काश्याजान्  
 न निन्दत । वृद्धान् गुरुन् नृपान् च न अपाच्यिष्येत् ।  
 हे छात्राः ! यूयम् अपललाः न स्यात् । हे रामश्यामा !  
 पुनाम् गुरुम् नत्वा गृहम् गच्छेत् । हे विमलानकमल !  
 पुनाम् संध्याम् कृत्वा भजनम् जायेतम् ।

गुरो ! किम् अहम् पाठम् पठयम् ? किम् अपावाम्  
 पाचकभ्यः पुनम् पच्छेव ? किम् वयम् देशस्य रक्षाय  
 युद्धं युष्माम् शत्रून् च जयेम ?

अप्यमात्र

१. नय शब्दः - पुन - पुनः करण  
 पाच्यसिद्ध - इच्छा करण  
 पाच्यसिद्ध - विरक्ति करण

गुरु वक्षः - साकं वक्षः नत्वा  
 उत्क्रांथ - इन्द्रवत्  
 अपहृत्वा - इन्द्र विष्णु मयिना  
 वस्त्रपूतम् - रूपेण विष्णु इन्द्र  
 पाचक - भिक्षुवारा



2.  $\sin \frac{1}{2} \frac{\pi}{2} \frac{\pi}{2} \frac{\pi}{2} : -$

$$\begin{array}{r} 1 \\ 462 \end{array} \quad \begin{array}{r} 1 \\ 46412 \end{array} \quad \begin{array}{r} 1 \\ 464 \end{array}$$

2.  $\cos 2$   $\sin 1$   $\sin 1/2$  : —

(5).  $\frac{2}{198} \frac{20}{17190} \frac{1}{2100} \frac{1}{144} \frac{2}{1050} \frac{1}{914211} \frac{1}{H}$   
 $\frac{1}{5400} \frac{1}{\cancel{17190}} \frac{1}{2100} \frac{1}{144} =$

$\frac{1}{2} \times 100 = 50\%$ ,  $\frac{1}{3} \times 100 = 33\frac{1}{3}\%$ ,  $\frac{1}{4} \times 100 = 25\%$ ,  $\frac{1}{5} \times 100 = 20\%$ ,  $\frac{1}{6} \times 100 = 16\frac{2}{3}\%$

(59) 149915 226  
all 154:—

2.  $\frac{1}{\sin 45^\circ}$  का मान ज्ञात करें।

$$\begin{array}{r} 100 \\ 419 \overline{) 41900} \\ \underline{419} \phantom{00} \\ 0 \phantom{00} \end{array}$$

2  $\frac{519}{519} \frac{21134}{21134} \frac{1}{1}$   $\frac{1}{1} \frac{21134}{21134} \frac{1}{1}$

[illegible]

8.  $\frac{1}{x^2} \cdot \frac{1}{x} = \frac{1}{x^3}$

2.  $\frac{4410}{441421} \approx \frac{1}{100}$  या दग  $\frac{1}{100}$  शायद वग  $\frac{1}{100}$

६.  $\frac{1}{x^2} = x^{-2}$   $\frac{d}{dx} x^{-2} = -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$



त्रयोविंशः ५१६:

~~पञ्चाङ्गानि पञ्चानि~~  
मूलतयः

- १ - दुर्लभः प्राकृतं मित्रं दुर्लभः क्षेमकृतं सुतः ।  
दुर्लभां सदृशां भाषां दुर्लभः त्वज्जः प्रियः ॥
- २ - साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साधवः ।  
तीर्थं कलति कालेन सद्यः साधुसमागमः ॥
- ३ - शान्तितुल्यं तपो नास्ति न संतोषात् परं सर्वम् ।  
न तृष्णायाः परा व्याधिः न च यमो दया-समः ॥
- ४ - पादपानां भयं वातात् पद्मानां शिशिराद् भयम् ।  
पर्वतानाम् भयं वज्रात् साधूनाम् दुर्जनाद् भयम् ॥
- ५ - प्रथमं नाजिता विद्या द्वितीयं नाजितं धनम् ।  
तृतीयं नाजितं पुण्यं चतुर्थं विं कारुष्यात् ॥
- ६ - हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।  
कर्णस्य भूषणं शास्त्रं भूषणं विं प्रयोजनम् ॥
- ७ - पयः पानं भजदुर्गां केवलं विषवर्द्धनम् ।  
उपदेशा हि मूर्खीणां प्रकोपाय न शान्तये ॥
- ८ - सत्येन आयितं पृथ्वी सत्येन तपते रविः ।  
सत्येन वायव्यं वान्ति सर्वं सत्यं पातच्छितम् ॥
- ९ - पुस्तकेषु या विद्या परहस्तेषु यद्धनम् ।  
उत्पन्नेषु न कार्येषु न सा विद्या न तद्धनम् ॥
- १० - सत्यं माता पिता शानं यमो भ्राता दया सखा ।  
शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रः यडेते मम वान्धवाः ॥

१, प्रथमा

१. नमः १०८ - प्राकृतम् - सध्या  
क्षेमकृत - प्रायुर्का रता करेन कला



$$\begin{array}{r} 1 \\ 48 \overline{) 480} \\ \underline{48} \phantom{0} \\ 0 \phantom{0} \end{array}$$
[illegible]

$\frac{1}{2} \times 100 = 50\%$ ,  $\frac{1}{3} \times 100 = 33\frac{1}{3}\%$ ,  $\frac{1}{4} \times 100 = 25\%$ ,  $\frac{1}{5} \times 100 = 20\%$

(59).  $\overline{199915} \frac{224}{1000000}$  all 154:—

$$2. \frac{1}{\sin 64^\circ} = \frac{1}{\sin 26^\circ} = \frac{1}{0.4384} = 2.28$$

$\frac{1}{1191}$        $\frac{1}{41134}$

2.  $\frac{21134}{1128} = 187.79$   $\frac{21134}{1128} = 187.79$   $\frac{21134}{1128} = 187.79$

$$2. \quad \frac{1}{\sqrt{21}} \cdot \frac{1}{6} \cdot \frac{1}{10} \cdot \frac{1}{41} = \frac{1}{\sqrt{21}} \cdot \frac{1}{2460}$$

3.  $\frac{1}{521} \frac{1}{6} \frac{1}{101} \frac{1}{41} \frac{1}{1114} \frac{1}{171} \frac{1}{1114}$

8.  $\frac{1}{5} \frac{1}{101} \frac{1}{67} \frac{1}{171} \frac{1}{1114} \frac{1}{171} \frac{1}{1114}$

४.  $\frac{5917}{5917} \cdot \frac{5917}{5917} = \frac{1}{5917}$

६.  $\frac{1}{x} \frac{1}{x^2 + 1} = \frac{1}{x} \frac{1}{(x + i)(x - i)} = \frac{1}{x} \left( \frac{A}{x + i} + \frac{B}{x - i} \right)$



त्रयोविंशः ५१६:

~~पञ्चमः पञ्चमः~~  
मूलतयः

- २ - दुर्लभः पाकृतं मित्रं दुर्लभः क्षेमकृतं सुतः ।  
दुर्लभा सदृशा भार्या दुर्लभाः त्वजः प्रियः ॥
- ३ - साधनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साधवः ।  
तीर्थे कलति कालेन सत्यः साधुसमागमः ॥
- ४ - शान्तिरुत्थं तपो नास्ति न संतोषात् परं सुखम् ।  
न तृष्णायाः परा व्याधिः न च अमो दया-समः ॥
- ५ - पादपानां भयं वातात् पद्मानां शिशिराद् भयम् ।  
पर्वतानाम् भयं वज्रात् साधूनाम् दुर्जनाद् भयम् ॥
- ६ - प्रथमं नाजिता विद्या द्वितीयं नाजितं धनम् ।  
तृतीयं नाजितं पुण्यं चतुर्थं किं कारुष्यात् ॥
- ७ - हस्तस्य भूषणं दागं सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।  
कर्णस्य भूषणं शाल्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम् ॥
- ८ - पयः पानं भजदुःखानां केवलं विषवर्धनम् ।  
उपदेशा हि मूर्खानां प्रकाशाय न शान्तये ॥
- ९ - सत्येन धर्मिते पृथ्वी सत्येन तपते रविः ।  
सत्येन वायवो वान्ति सर्वं सत्यं प्रतीकृतम् ॥
- १० - पुरस्तक्वेष या विद्या परहस्तेष यद्धनम् ।  
उत्पन्नेष न कार्येष न सा विद्या न तद्धनम् ॥
- ११ - सत्यं माता पिता ज्ञानं अमो भ्राता दया सखा ।  
शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रः पतेत मम वान्धवाः ॥

१, ५, ७, ९, ११

१ - नगरीः - पाकृतम् - सचरा  
क्षेमकृतम् - पापकृता रता दूरकृता  
सत्यः - शान्तिः  
दया - दया



$\overline{पयः} = \overline{द्वयम्}$   
 $\overline{मृगश्रिः} = \overline{सिंह}$   
 $\overline{मृगश्रिः} = \overline{कन्या}$

2.  $\overline{लक्ष्मणः} = \overline{मृगश्रिः} = \overline{म} + \overline{मृगश्रिः}$   
 $\overline{मृगश्रिः} = \overline{मृ} + \overline{मृगश्रिः}$   
 $\overline{मृगश्रिः} = \overline{मृ} + \overline{मृगश्रिः}$

3.  $\overline{मृगश्रिः} = \overline{मृ} + \overline{मृगश्रिः}$

(क)  $\overline{मृगश्रिः} = \overline{मृ} + \overline{मृगश्रिः}$   
 (ख)  $\overline{मृगश्रिः} = \overline{मृ} + \overline{मृगश्रिः}$



( इकारान्त उकारान्त नपुं० )

गङ्गायाः वारि पवित्रम् भवति । जातमः नक्तम् दानं  
न भक्षयति । लोकाः मय्येन वनम् अपाच्यन् । मय्येन  
शरीरस्य रोगाः नश्यन्ति । महाराजः रणजित्वा सिंहः अपक्ष्णा  
काणः अपक्ष्णा, परन्तु स्वयमेव सः शत्रून् जिह्वा पारक्य  
पञ्चाम्बुपदरा राज्यम् अपकरोत् । समुद्रस्य वारीणि  
मय्येन न भवन्ति । वेदगया अपक्ष्णीन् जुह्वन्ति ।  
मोजनम् भक्षयित्वा वारि न पिबत । नक्तम् दानं न  
स्वादत ।

रवीन्द्रः ~~दक्षिण~~ दक्षिण शक्तिराम मिश्रयति । बालस्य  
शरीरम् मृदु भवति । महम् पुरीषम् बहूनि फलानि  
भक्षयामि । सुरेन्द्रस्य जागृति स्फोटः भवति । रामस्य  
मुखम् लज्ज भवति । ललनाः वारिभ्यः कूपम् अपाच्यन् ।

नराः अपक्षिभ्याम् पश्यन्ति । पशवः ३ खगाः ३  
अपि अपक्षिभ्याम् पश्यन्ति । लोकेश इदम् पक्षिरक्षम् यत्  
काकः <sup>एक</sup> अपक्ष्णा पश्यति । शिवस्य त्रीणि अपक्ष्णीणि सन्ति ।  
हरः तृतीयेन अपक्ष्णा कामदेवम् मय्येन अपदहत् ।

पर्वतस्य सानुषु वृक्षाः सन्ति । वृक्षे मय्येन माक्षिकाः वसन्ति ।  
मय्येन माक्षिकाः ~~वसन्ति~~, पुष्पाणाम् रसम् <sup>वसन्ति</sup> यः पिबति,

~~मय्येन यः उदिरन्ति~~ ~~तानि सन्ति मय्येन यः~~  
वमात ~~उदिरन्ति~~ । यदा मय्येन माक्षिकाः ~~दृष्टव्यं~~ ~~वाच्यम्~~ दृशन्ति तदा  
पुष्पाणाम् बालकाणाम् अपक्षिभ्याम् मय्येन पश्यन्ति ।

परिचयः

१. नपुंसकः —

वारि - पानी  
दास्य - दास  
मय्येन - मय्येन  
माक्षिका - माक्षिका  
अपक्ष्णा - अपक्ष्णा  
जागृति - जागृति  
अपक्ष्णी - अपक्ष्णी

नक्तम् - रात का  
मृदु - कातल  
लज्ज - कादा  
ललना - लला  
कूपम् - कुआ  
हर - शिव  
वम - वमन कर्म

२. लिङ्गान्तरः —

वारि, दानं तथा मय्येन क रस्य ० पारक्य  
पारक्य ० पारक्य ०



$\overline{पयः} = \overline{द्वयः}$   
 $\overline{मज्झि} = \overline{सिद्ध}$   
 $\overline{मज्झि} = \overline{मज्झि}$

2.  $\overline{मज्झि} = \overline{मज्झि} = \overline{म} + \overline{ज्झि}$   
 $\overline{मज्झि} = \overline{म} + \overline{ज्झि}$   
 $\overline{मज्झि} = \overline{म} + \overline{ज्झि}$

3.  $\overline{मज्झि} = \overline{मज्झि} = \overline{म} + \overline{ज्झि}$

(क)  $\overline{मज्झि} = \overline{मज्झि} = \overline{म} + \overline{ज्झि}$   
 (ख)  $\overline{मज्झि} = \overline{मज्झि} = \overline{म} + \overline{ज्झि}$



( इकारान्त उकारान्त नपुं० )

गङ्गायाः वारि पवित्रम् भवति । गौतमः नक्तम् दधि  
न भक्षयति । लोकाः मय्येन वगन् प्रपञ्चन् । मय्येन  
शरीरस्य राजाः वशयन्ति । महाराजः राजजित्तल्लहः प्रपञ्चन् ।  
काणः प्रपञ्चन्, परन्तु स्वयमेव तः शत्रून् जिह्वा पारयन्  
पञ्चाशत्पदेषु राज्यम् प्रकरोति । समुद्रस्य वारीणि  
मय्यराणि न भवन्ति । वेदव्यासः प्रपञ्चन् ।  
गौतमम् भक्षयित्वा वारि न पिबति । नक्तम् दधि न  
खादति ।

रवीन्द्रः ~~दध्नि~~ शंकरम् भिक्षयति । बालस्य  
शरीरम् मृदु भवति । महम् पतिद्वयम् बहूनि फलानि  
भक्षयामि । सुरेन्द्रस्य जानुनि ह्योः प्रपञ्चन् । रामस्य  
मुखम् लम्बं भवति । ललनाः वारिमेव कूपम् प्रपञ्चन् ।

नराः प्रपञ्चन् परयन्ति । पशवः च खगाः च  
अपि प्रपञ्चन् परयन्ति । लाकृष इहम् प्रपञ्चन् यत्  
काकः प्रपञ्चन् परयति । शिवस्य त्रीणि प्रपञ्चन् सन्ति ।

हरः तृतीयेन प्रपञ्चा कामदेवम् ~~प्रपञ्चन्~~ प्रपञ्चति ।  
पर्वतस्य सानुषु वृक्षाः सन्ति । वृक्षेषु मय्यभाक्षकाः वसन्ति ।  
मय्यभाक्षकाः ~~मय्येन~~ प्रपञ्चन् रसम् <sup>वामा</sup> यं पिबन्ति,

~~मय्येन च उदिरान्ति च तानि च मय्येन च~~  
वमात ~~मय्येन~~ । यदा मय्यभाक्षकाः ~~प्रपञ्चन्~~ वमात दशान्ततदा  
दुष्टाणाम् बालकाणाम् प्रपञ्चन् मय्येन पतन्ति ।

परिचाल

१. नपुंसकः -

वारि - दधि  
दधि - दधि  
मय्य - शत्रून्  
प्रपञ्च - प्रपञ्च  
प्रपञ्च - प्रपञ्च  
जानु - जानु  
प्रपञ्च - प्रपञ्च

नक्तम् - रात्रि  
मृदु - मृदु  
लम्ब - लम्ब  
ललना - ललना  
कूप - कूप  
हर - हरि  
वम - वम

२. ललना कतिपयः -

वारि, दधि, नरा, मय्य, च रसं च पारयन्ति ।  
पारयन्ति च दधिवत् ।



३. पुर का काम: —

(क) दिवस तयारी का समय का जिक्र: —

५. नवरात्रि दिवस में — १

२. रोजाजीन लिखें: — काम: खाली है।

३. लोका: — काम: खाली है।

४. — काम: खाली है।

५. सुरन्दर — काम: खाली है।

(ख) सितम्बर में शुक्रवार का जिक्र: —

१. शहर से शरीर के राजा नवल शहर है।

२. हम शरीर बुरा चल खाने है।

३. परा पौर वसी का पौरवा से दूर है।

४. है बालका (मोजा) रवा कर बाला के पिता।

५. शिव जी ने रासरा पौरव ले काम देव का जला दिया।



पर्यायशब्दः पाठः

(किम् शब्दः)

कः रामायणे चोक्तः ?

वाल्मीकिः रामायणे चोक्तः ।

कः रामायणे चोक्तः ?

कविः नमः न रामायणे चोक्तः

न चोक्तः चोक्तः ?

हिन्दु, रामः लक्ष्मणः न चोक्तः चोक्तः ?

रामः कश्चिन्मया ?

रामः रामायणे चोक्तः ।

वाल्मीकिः कश्चिन्मया ?

वाल्मीकिः रामायणे चोक्तः ।

अथ कश्चिन्मया चोक्तः

अथ चोक्तः चोक्तः, अथ चोक्तः चोक्तः ।

चोक्तः चोक्तः, चोक्तः चोक्तः ।

अथ चोक्तः चोक्तः, चोक्तः चोक्तः ।

चोक्तः चोक्तः चोक्तः चोक्तः ?

चोक्तः चोक्तः चोक्तः चोक्तः ।

चोक्तः चोक्तः चोक्तः चोक्तः ?

चोक्तः चोक्तः चोक्तः चोक्तः ।

चोक्तः चोक्तः चोक्तः चोक्तः ?

चोक्तः चोक्तः चोक्तः चोक्तः ।

चोक्तः चोक्तः चोक्तः चोक्तः ।

चोक्तः चोक्तः चोक्तः चोक्तः ।

पर्यायशब्दः

1. पर्यायशब्दः चोक्तः - चोक्तः चोक्तः ।

2. चोक्तः चोक्तः - चोक्तः चोक्तः ।

3. चोक्तः चोक्तः - चोक्तः चोक्तः ।



$$\frac{1}{\sin u}, \frac{1}{\cos u}, \frac{1}{\tan u}, \frac{1}{\cot u}, \frac{1}{\sec u}, \frac{1}{\csc u}$$

(10)  $\frac{1.4944}{2.225} = \frac{1.4944}{2.225}$

2.  $\frac{11}{110} \frac{6}{110} \frac{2}{10} \frac{1}{100} \frac{1}{100} \frac{1}{100}$

2.  $\frac{2}{216}$   $\frac{2}{1080}$   $\frac{2}{540}$   $\frac{2}{270}$   $\frac{2}{135}$

$\frac{1}{2} \cdot \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

$$x. \quad \frac{0}{1414} \quad \frac{0}{1414} \quad \frac{0}{1414} \quad \frac{0}{1414} \quad \frac{0}{1414} \quad \frac{0}{1414} \quad \frac{0}{1414}$$
$$\frac{2}{\log} \quad \frac{9}{41} \quad \frac{1}{0.1741} \quad \sqrt[2]{118} \quad \sqrt[2]{461}$$

५.  $\frac{1}{1000} \times \frac{1}{1000} = \frac{1}{1000000}$



(सर्व जग, सर्व)  
 सर्व जग प्राणम साधु न भवति । सर्व लोक सर्व  
 लोकाः सर्वम इच्छन्ति । य जगः सर्वान् सर्वान्  
 कृत्वा शिवम् भजति तेषाम् जीवनम् अन्तम् भवति ।  
 मानि मानि पुस्तकानि भूयम् इच्छन्ति तानि तानि पठन् ।  
 शिवम् कृत्वा सर्व जगः सर्वम् वदन्ति । सर्वः  
 सर्वेषाम् पराधकाराय भवति । सर्वम् न  
 विद्या न तपः न च दानम् तेषाम् जीवनम् किम्  
 भवति अन्तम् न भवति । तेषाम् अन्तम्, अन्तम् च  
 न भवति भूयम् तेषाम् अन्तम् अन्तम् च भवति ।  
 य परेषाम् उपकाराय भवति सर्वान् तेषाम् जीवनम्  
 अन्तम् भवति । सर्वम् गृहे भवति गृहे भवति  
 गृहे भवति, गृहे भवति च भूय न भवति तन् गृहे  
 भवति भवति ।

यस्मात् कारणात् तन्मप्य पारशराम्  
 गच्छति तस्मात् सः कारणात् अहम् पारशराम्  
 गच्छामि । यत् यत् कार्यम् सुखीनां कर्तुं तत्  
 तत् सर्वं कार्यम् लीलया अपि कर्तुं । येन माता वा  
 रामः वगैः प्रजापतेः तेन सर्वं मागेवा लक्ष्मीः  
 नित्या ज वगैः प्रजापतेभ्यः । इ शिष्याः । यत् यत्  
 गुरुः प्रादिशति तत् तत् पालय । विद्यायां च  
 सर्वेषां अनन्तरम् अनुमानं करोति । सोम इतः सर्वे  
 बाले च उत्तरतमः कर्तुं ।

1,424,007

2.  $\frac{1}{24} \pi \sigma^2 : -$

$$\frac{1}{11000} - \frac{1}{12100}$$

41 — 5441

$\overline{41} - \overline{2111}$   
 $\overline{211111111111} - \overline{211111} \rightarrow \overline{111111}$

21/11/2020







कालः (संलग्नः)

$\frac{0}{1111} \quad \frac{0}{1111} \quad \frac{1}{1111} \quad \frac{1}{1111} \quad \frac{1}{1111} \quad \frac{1}{1111} \quad \frac{1}{1111}$

$\frac{0}{\text{स्प्रिंगला}} - \frac{0}{\text{पत्ता शाही : हारा : 1}}$

$\frac{1}{1-x} = 1 + x + x^2 + x^3 + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^2} = 1 + x^2 + x^4 + x^6 + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^3} = 1 + x^3 + x^6 + x^9 + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^4} = 1 + x^4 + x^8 + x^{12} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^5} = 1 + x^5 + x^{10} + x^{15} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^6} = 1 + x^6 + x^{12} + x^{18} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^7} = 1 + x^7 + x^{14} + x^{21} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^8} = 1 + x^8 + x^{16} + x^{24} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^9} = 1 + x^9 + x^{18} + x^{27} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{10}} = 1 + x^{10} + x^{20} + x^{30} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{11}} = 1 + x^{11} + x^{22} + x^{33} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{12}} = 1 + x^{12} + x^{24} + x^{36} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{13}} = 1 + x^{13} + x^{26} + x^{39} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{14}} = 1 + x^{14} + x^{28} + x^{42} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{15}} = 1 + x^{15} + x^{30} + x^{45} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{16}} = 1 + x^{16} + x^{32} + x^{48} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{17}} = 1 + x^{17} + x^{34} + x^{51} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{18}} = 1 + x^{18} + x^{36} + x^{54} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{19}} = 1 + x^{19} + x^{38} + x^{57} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{20}} = 1 + x^{20} + x^{40} + x^{60} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{21}} = 1 + x^{21} + x^{42} + x^{63} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{22}} = 1 + x^{22} + x^{44} + x^{66} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{23}} = 1 + x^{23} + x^{46} + x^{69} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{24}} = 1 + x^{24} + x^{48} + x^{72} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{25}} = 1 + x^{25} + x^{50} + x^{75} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{26}} = 1 + x^{26} + x^{52} + x^{78} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{27}} = 1 + x^{27} + x^{54} + x^{81} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{28}} = 1 + x^{28} + x^{56} + x^{84} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{29}} = 1 + x^{29} + x^{58} + x^{87} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{30}} = 1 + x^{30} + x^{60} + x^{90} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{31}} = 1 + x^{31} + x^{62} + x^{93} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{32}} = 1 + x^{32} + x^{64} + x^{96} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{33}} = 1 + x^{33} + x^{66} + x^{99} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{34}} = 1 + x^{34} + x^{68} + x^{102} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{35}} = 1 + x^{35} + x^{70} + x^{105} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{36}} = 1 + x^{36} + x^{72} + x^{108} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{37}} = 1 + x^{37} + x^{74} + x^{111} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{38}} = 1 + x^{38} + x^{76} + x^{114} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{39}} = 1 + x^{39} + x^{78} + x^{117} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{40}} = 1 + x^{40} + x^{80} + x^{120} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{41}} = 1 + x^{41} + x^{82} + x^{123} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{42}} = 1 + x^{42} + x^{84} + x^{126} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{43}} = 1 + x^{43} + x^{86} + x^{129} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{44}} = 1 + x^{44} + x^{88} + x^{132} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{45}} = 1 + x^{45} + x^{90} + x^{135} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{46}} = 1 + x^{46} + x^{92} + x^{138} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{47}} = 1 + x^{47} + x^{94} + x^{141} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{48}} = 1 + x^{48} + x^{96} + x^{144} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{49}} = 1 + x^{49} + x^{98} + x^{147} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{50}} = 1 + x^{50} + x^{100} + x^{150} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{51}} = 1 + x^{51} + x^{102} + x^{153} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{52}} = 1 + x^{52} + x^{104} + x^{156} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{53}} = 1 + x^{53} + x^{106} + x^{159} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{54}} = 1 + x^{54} + x^{108} + x^{162} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{55}} = 1 + x^{55} + x^{110} + x^{165} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{56}} = 1 + x^{56} + x^{112} + x^{168} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{57}} = 1 + x^{57} + x^{114} + x^{171} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{58}} = 1 + x^{58} + x^{116} + x^{174} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{59}} = 1 + x^{59} + x^{118} + x^{177} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{60}} = 1 + x^{60} + x^{120} + x^{180} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{61}} = 1 + x^{61} + x^{122} + x^{183} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{62}} = 1 + x^{62} + x^{124} + x^{186} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{63}} = 1 + x^{63} + x^{126} + x^{189} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{64}} = 1 + x^{64} + x^{128} + x^{192} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{65}} = 1 + x^{65} + x^{130} + x^{195} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{66}} = 1 + x^{66} + x^{132} + x^{198} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{67}} = 1 + x^{67} + x^{134} + x^{201} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{68}} = 1 + x^{68} + x^{136} + x^{204} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{69}} = 1 + x^{69} + x^{138} + x^{207} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{70}} = 1 + x^{70} + x^{140} + x^{210} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{71}} = 1 + x^{71} + x^{142} + x^{213} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{72}} = 1 + x^{72} + x^{144} + x^{216} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{73}} = 1 + x^{73} + x^{146} + x^{219} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{74}} = 1 + x^{74} + x^{148} + x^{222} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{75}} = 1 + x^{75} + x^{150} + x^{225} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{76}} = 1 + x^{76} + x^{152} + x^{228} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{77}} = 1 + x^{77} + x^{154} + x^{231} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{78}} = 1 + x^{78} + x^{156} + x^{234} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{79}} = 1 + x^{79} + x^{158} + x^{237} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{80}} = 1 + x^{80} + x^{160} + x^{240} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{81}} = 1 + x^{81} + x^{162} + x^{243} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{82}} = 1 + x^{82} + x^{164} + x^{246} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{83}} = 1 + x^{83} + x^{166} + x^{249} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{84}} = 1 + x^{84} + x^{168} + x^{252} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{85}} = 1 + x^{85} + x^{170} + x^{255} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{86}} = 1 + x^{86} + x^{172} + x^{258} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{87}} = 1 + x^{87} + x^{174} + x^{261} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{88}} = 1 + x^{88} + x^{176} + x^{264} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{89}} = 1 + x^{89} + x^{178} + x^{267} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{90}} = 1 + x^{90} + x^{180} + x^{270} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{91}} = 1 + x^{91} + x^{182} + x^{273} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{92}} = 1 + x^{92} + x^{184} + x^{276} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{93}} = 1 + x^{93} + x^{186} + x^{279} + \dots$   
 $\frac{1}{1-x^{94}} = 1 + x^{94} + x^{188} + x^{282$

सुशीला - सपु. इदम. मयाहः. इति नाम्नः. एव एतदम।

~~सुखी~~  
सरला - सुखी ! जाना ली सफाई कान कान दिना न भयान ?  
तथा नाना न \* कथम ।

सुशीला - तेषाम् नामानि च ~~न~~ कथय ।  
 ॥ सोमवारः, ततः मङ्गलवारः, बुधवारः, वृहस्पति-  
 वारः, शुक्रवारः, शनिवारः च । मङ्गलवारम् सोमवारम्  
 सोमवारम् वदन्ति, वृहस्पतिम् च शुक्रवारम्, शनिवारम्  
 च सोमवारम्, शनिवारम् सोमवारम् सोमवारम् च कथयन्ति ।  
 रविवासरे विष्णुलयेषु, कामालयेषु तथा न्यायालयेषु  
 अग्नयेषु, अथवाः च भवति । विष्णुलयेषु सोम

$\frac{1}{1000} \div \frac{1}{100} = \frac{1}{1000} \times \frac{100}{1} = \frac{1}{10}$

संस्कृत - मास कति सप्ताहः पश्चाः न भवति ?

सर्वना - सर्वनाम्न एव त्वम् सर्वनाम्न १३५५  
सुशीला - सर्वनाम्न एव त्वम् सर्वनाम्न १३५५  
प्रापि न जानाति यत् सर्वनाम्न - सर्वनाम्न १३५५  
सर्वनाम्न १३५५ न सर्वनाम्न सर्वनाम्न १३५५  
सर्वनाम्न १३५५ न सर्वनाम्न सर्वनाम्न १३५५  
सर्वनाम्न १३५५ न सर्वनाम्न सर्वनाम्न १३५५

$\frac{1}{x} = \frac{1}{\sqrt{x^2}} = \frac{1}{(x^2)^{\frac{1}{2}}} = \frac{1}{2} (x^2)^{-\frac{1}{2}}$

[illegible]

ॐ नमः । शिवाय । नमः ।  
 द्वां द्वां गाथा मन्त्रः भवति । यथा वेदाङ्ग ५४०६।  
 गीताः , पाठाङ्गावली वलाः , भाष्यद्वारा , शरत्  
 काण्ड - भाषा इत्यन्तः , पञ्चमाणां शास्त्राः , पाठानामना  
 वल्लभः च सति ।







पहला विंशः पाठः

पञ्चाशत् पद्यानि

- १ - माता शत्रुः पिता वरः यत्र बाला न पाठतः ।  
न शोभत सन्नामय इत्यमय क्ता यथा ॥
- २ - उद्यमं हि सिद्धान्तं कायाणि न मत्तारथः ।  
न हि लप्स्यसि सिद्धयः पुत्रिशान्तिं मुखं मृगाः ।
- ३ - उत्सवं व्यसनं चैव दोषं क्षणं राष्ट्रविल्लव ।  
राजद्वारं शमयन् च यः तिष्ठति स आनन्दवः ॥
- ४ - यदा ललंगारादृता भावयन्ति भावयन्ति ।  
तदा सलज्जगोष्ठीषु पातयन्ति पातयन्ति ॥
- ५ - कोऽतिभारः समर्थानां किं दूरं व्यवसायिनाम् ।  
को विदेशः लब्ध्यानां कः परः प्रियवादिनाम् ॥
- ६ - वन्द्यः को नाम दुष्टानां कुलपतः को न याचतः ।  
को न दुष्टाति वित्तं कुल्ये को न पाण्डितः ॥
- ७ - क्षमा शत्रौ च मित्रं च यतीनाम् खं भूषणम् ।  
अपराधिषु सख्यं नृपाणां सैव भूषणम् ॥
- ८ - भर्ता हि परमं नारां भूषणं भूषणं विना ।  
सखा विराडृता तेन शोभताऽपि न शोभताः ॥

१५७ पाठ

१ - नये शब्दः -

वक्र - काला  
उद्यम - परिश्रम  
मत्तारथ - मत्तारथ  
व्यसन - विपत्तिः  
गोष्ठी - समूह  
समर्थ - सामर्थ्यवान्  
व्यवसायिनाम् - परिश्रमकरवानां  
दोष - दोष

प्रियवादिनाम् - प्रियवादिनां  
कः - किम्  
दुष्टाति - दुष्टाति  
मित्र - मित्र







पहला विंशः पाठः

१०० पद्याः

- १ - माता शत्रुः पिता वरः स न बाला न पाठितः ।  
न शोभते समामध्ये हलमंध्ये क्वा यथा ॥
- २ - उच्चमन हि सिद्धान्त कापाणि न मत्तारथः ।  
न हि लघ्वरथः सिद्धयः प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।
- ३ - उत्सवे व्यसनं चैव दोषं ह्यराष्ट्रविलसव ।  
राजद्वारे शमयानं च यः तिष्ठति स आनन्दवः ॥
- ४ - यदा सत्संगराहता भावयन्ति भावयन्ति ।  
तदा सत्सङ्गजगद्गीषु पातयन्ति पातयन्ति ॥
- ५ - कोऽतिभारः समर्थानां किं दूरं व्यवसायिनाम् ।  
को विदेशः लब्धिपानां कः परः प्रियकाङ्क्षिणाम् ॥
- ६ - वन्यः को नाम दुष्टानां कुलपते को न पाथितः ।  
को न हृष्यति वित्तं कुल्य को न पाठितः ॥
- ७ - क्षमा शत्रौ च मित्रं च यतीनाम् ख नूषणम् ।  
अपराधिषु सत्त्वेषु नृपाणां ख नूषणम् ॥
- ८ - भर्ता हि परमं नार्थं नूषणं नूषणे विना ।  
एषा विराहता तेन शोभताऽपि न शोभताः ॥

१५४ पाठ

१ - नमः शब्दः -

वक्र - बाला  
उच्चम - पारिजम्  
मत्तारथ - मत्तारथ इव  
व्यसन - विपत्तिः  
गोष्ठी - समा

समर्थ - सामर्थ्यवान्

व्यवसायिनाम् - प्रियकाङ्क्षिणानां

दोषं ह्य

लघ्वरथ - लघ्वरथ इव

प्रियकाङ्क्षिणाम् - प्रियकाङ्क्षिणानां  
के लिये  
दुष्टानां - अपराधिनानां  
मित्र - मित्राणां



$$\frac{1}{152} + \frac{1}{19011657152} = \frac{1}{19011657152}$$

$$\frac{1}{k_1} \text{ प्रति मास} = \frac{1}{k_2} \text{ प्रति मास}$$

$$\frac{1}{\sin \theta} = \sec \theta$$

$$\frac{24011911}{24011911} = \frac{11}{2401} + \frac{0}{1911}$$

$$\frac{1}{211271514} = \frac{1}{211271} + \frac{0}{1414}$$

2. test at 14: —

(F),  $\frac{1}{n^2} \cdot \frac{1}{n} \cdot \frac{1}{n} = \frac{1}{n^4}$  for  $n=1$  to  $\infty$ : —

(10)  $\frac{0}{4912 \text{ म}} \frac{L}{41200 \text{ का}} \frac{11}{449 \text{ वा}} \frac{22}{18 \text{ रा}} \frac{21}{11 \text{ लि}} \frac{21}{12 \text{ रवा}}$







2.  $\frac{1}{2} \frac{2}{104} \frac{1}{217} =$  —

प्रत्येक वर्ष: —

$$2. \quad \frac{11}{21} \quad \frac{2}{9014} \quad \frac{1}{6} \quad \frac{1}{y f d a} \quad \frac{1}{M132111} \quad \frac{2}{241} \quad \frac{2}{2} \quad n1$$

2.  $\frac{2 \text{ लीपसा}}{13 \text{ साल}} \div \frac{1 \text{ लीपसा}}{1 \text{ साल}} = \frac{2}{13} \div \frac{1}{1} = \frac{2}{13} \times \frac{1}{1} = \frac{2}{13}$

3. जब  $\frac{2}{21}$  को  $\frac{1}{4}$  भाग दिया जाय तो  $\frac{1}{4}$  का  $\frac{2}{21}$  भाग निकलता है।

2.  $\frac{4}{5} \times \frac{1}{2} = \frac{4}{10} = \frac{2}{5}$  याद: मममम  $\frac{1}{2} \times \frac{4}{5}$   
 $\frac{4}{5} \times \frac{1}{2} = \frac{4}{10} = \frac{2}{5}$  याद: मममम  $\frac{1}{2} \times \frac{4}{5}$

24.  $\frac{30}{100} \times \frac{1}{100} = \frac{3}{10000}$   $\frac{3}{10000} \times 100 = \frac{3}{100}$   $\frac{3}{100} \times 100 = 3\%$



त्रिंशः पाठः

( ~~महामा~~ प्रश्नार् )

द्वौ छात्रौ

यज्ञदत्तः - ननु सोम दत्त, कुशलो त्वम् ?

सोम दत्तः - कुशलः, अपिस्म परमश्रवणं कृपया ।

यज्ञदत्तः - कस्यां कदायाम् पठसि ?

सोम दत्तः - अपह्म छब्बी-कदायाम् पठामि ।

यज्ञदत्तः - कीदृशं छात्राः सान्ति कदायाम् ?

सोम दत्तः - मम कदायाम् चत्वारिंशत् छात्राः सान्ति ।

यज्ञदत्तः - किम् किम् पठसि त्वम् ?

सोम दत्तः - अपह्म अष्टाङ्ग-भाष्यम्, जाणिताम्, सामान्यं विशाङ्गम्  
सामाजिकम् शास्त्रम्, <sup>हिदी</sup> ~~अष्टाङ्ग~~ भाष्यम्, पञ्चाङ्ग-  
भाष्यम् च पठामि ।

यज्ञदत्तः - किम् त्वम् संस्कृतम् च पठसि ?

सोम दत्तः - ज्ञाम्, मित्र ! पठामि संस्कृतम् अपि ।

यज्ञदत्तः - मूलम् तत्र किम् संस्कृतपरतकम् पठत ?

सोम दत्तः - वयम् ..... पठामः ।

यज्ञदत्तः - तव <sup>विद्यालये</sup> ~~अष्टाङ्गभाष्यम्~~ कीदृशं प्रश्नोपपादकाः सान्ति ?

सोम दत्तः - तत्र प्रश्नोपपादकाः सान्ति ।

यज्ञदत्तः - कः त्वम् सुष्ठुमात्रं संस्कृतम् पाठयति ?

सोम दत्तः - प्रश्नोपपादकाः त्वम् अपि सुष्ठुमात्रं संस्कृतम् पाठयति ।

यज्ञदत्तः - कः सुष्ठुमात्रम् प्रश्नोपपादकाः ?

सोम दत्तः - श्री जगद्वाराचार्यः ~~मम~~ अपि सुष्ठुमात्रम्  
प्रश्नोपपादकाः अपि सन्ति ।

यज्ञदत्तः - कीदृशं कदाः सान्ति तव विद्यालये ?

सोम दत्तः - एकादश कदाः सान्ति मम विद्यालये ।

यज्ञदत्तः - ननु संस्कृत भाषणं कर्तुम् प्रशङ्कते ?

सोम दत्तः - अपि किम् । सरलया भाषया भाषणं कर्तुम् त्वम्  
अपि ।

यज्ञदत्तः - अतः जगद्वाराचार्यं जगताय इदानीम् ।

सोम दत्तः - कुशलः भवन्वादाः, गच्छ पुनर्दर्शनाय, शुभाः

तव सन्धानं सन्तु ।



142447

१. नव शब्द :-

फरानी - फरान पूर्व  
 नर - (यह के अर्थ में आता है)  
 चल्वादिशब्द - चालील  
 आहुल भाषा - अंग्रेजी  
 अथ लिख - हां  
 अंगुजागीह - अंगुजा 224  
 अरु - अरु  
 अ-शास्त्र - शास्त्र (अवयव)  
 अ-वर्णनाय - अ-वर्णनाय (अ-वर्णनाय)

२. यह का मत है कि लिख का अर्थ अंगुजा कर।

३. अर का मत :-

(क) वाक्यों में अंगुजा कर :-

फरानी, नर, अथ लिख, अ-वर्णनाय,  
 अंगुजागीह, अ-वर्णनाय ।

(ख) अंगुजा कर के अर्थ :-

अंगुजा कर कि या लय में पढ़ते हैं। वहां  
 लिखते कहते हैं। अंगुजा कर पाठशाळा में  
 लिखते अंगुजा कर कहते हैं। अंगुजा कर अंगुजा  
 अंगुजा लिखते में पढ़ते हैं। अंगुजा लिखते  
 अंगुजा पढ़ते हैं। अंगुजा अंगुजा अंगुजा पढ़ते  
 का अंगुजा नंगुजा है। अंगुजा अंगुजा अंगुजा  
 224 अंगुजा



स्वकत्रिंशः पाठः

स्मरणायां पञ्चाशत्

१ - त्वम<sup>४</sup> एव माता न पिता त्वम<sup>४</sup> एव

त्वम<sup>४</sup> एव बन्धुः न सखा त्वम<sup>४</sup> एव ।

त्वम<sup>४</sup> एव विद्या दावणं त्वम<sup>४</sup> एव

त्वम<sup>४</sup> एव सर्वं मम देवदेव ॥

२. सा माया या गृहे दृष्टा

सा माया या पञ्चावती ।

सा माया या पातपाणा

सा माया या पातवता ॥

३ - या नालमज न च गुरो न च मृत्यवर्गे

दीनं दयां न क्रुते न च बन्धुवर्गे ।

विं तस्य जीवितफलं लोक

साकाऽपि जीवति निराय बलि न मुक्त ॥

४ - येषां न विद्या न तपो न दानं

ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ।

ते मृत्युलोकं भुवि शरभूताः

मृत्युरूपेण भूताः चरन्ति ॥

५. भोगा न भुक्ता वयम<sup>४</sup> एव भुक्ताः

तपो न तप्तं वयम<sup>४</sup> एव तप्ताः ।

काला न पाता वयम<sup>४</sup> एव पाताः

तृष्णा न जीर्णा वयम<sup>४</sup> एव जीर्णाः ॥

६. विद्या विवादाय अतः मदाय

शास्त्राः परेषां परिपाडनाय ।

खलस्य साध्यावपरीतम् स्तब्ध

ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥



७ -

मूलं भुजङ्गः ॥ गिरिवरं ललवङ्गः ॥  
 शारवा विहङ्गः ॥ कसमान भुङ्गः ॥  
 आपासंघत इवजङ्गः ॥ समस्तः ॥  
 न चन्दनं मुख्यात् शीतलत्वम् ॥

८ -

गुरुः न ल स्यात् स्वजग न ल स्यात्  
 पिता न ल स्यात् जगती न ल स्यात् ॥  
 ॥ १ ॥ देवा न ल स्यात् न पतिः च ल स्यात्  
 न मानयस्य यः समुपतमृत्पुम् ॥

संज्ञा

६ - इन मन्त्रा

१ - वयं शब्दः -

- राधा - मित्र
- द्विविधा - अन्त
- देवदेव - १ इवराधा १ इवरा
- देवा - अन्त
- प्रजावती - सन्तान वाता
- आपामज - अन्त
- गुरु - श्रवता १
- आव - पृथ्वी पर
- मृगा - पृथ्वी
- विकार - मृगा
- भुजङ्ग - शिंप
- ललवङ्ग - वन्द
- विहङ्ग - पक्षी
- भुङ्ग - मृग
- समुपतमृत्पुम् - अन्त १ मृत्पुम् १

२. लव देवा १ कपटत्व करा १



द्वितीयः पृष्ठः

कथा  
स्वामिगन्ता आत्रा

यदा महाराजः संग्रामसिंहः स्वर्गम् अगच्छत् तदा तत्पुत्रः विक्रमादित्यः राज्यं अभिषिक्तः । परम सः अपाययः  
अपलीत । सामन्ताः तम् राजासनात् अपाययन् । ३ तस्य कारा  
कानिष्ठः कुमारः उदयसिंहः तावत् शिरः एव अभवत् । दत्तापुत्रः  
वनवीरः शिरः राजकुमारस्य संरक्षकः अभवत् । सः एव स्वामी  
राजकायाणि निरवहत् ।

वनवीरस्य हृदये राज्यलाभः उदगच्छत् । सः एकदा निशापाम्  
शायनम् विक्रमादित्यम् अपलिना गृह्णन् । कारागृहं संवक्तः  
गत्वा उदयसिंहस्य आत्राम् पञ्चाम् पोषायत् । सा च शापम्  
एव राजाशिरसि उदयसिंहम् कलकराण्डकायाम् निधाय, ताम् च  
गृहीत्वा सरितायाः तटे प्रतीक्षितं मृत्युम् अपादयत् । सः अपि  
ताम् कराण्डकाम् गृहीत्वा सत्वरम् गदातटम् प्रतिगच्छत् ता  
आत्रा च तदा महद-<sup>॥१॥</sup>चयणं स्वपुत्रम् राजाशिरः पथे न्यवशयत् ।  
अपि च एव वनवीरः कृपाणाम् अपादय राजपालादम् अवशयत् ।  
अपृच्छत् च 'कुत्र अस्ति उदयसिंहः?' इति । सा च हृदयं पोषण-  
मयम् निधाय काम्पितेन करेण पथे संकेतम् अकरोत् ।

एकेन एव पहारेण वनवीरः शिरः इ एवम् अपकरोत् ।  
निरगच्छत् च सत्वरम् एव । आत्रा च पुत्रस्य शवम्, <sup>॥१॥</sup>सोऽ ~~सोऽ~~  
निधाय गदातटम् अगच्छत् तम् च तत्र जले अपातयत् । उदयम्  
सा स्वामिगन्ता पञ्चा स्वपुत्रं पालयत्य ~~स्वपुत्रम्~~ स्वामिलतम्  
अपरात् । काले गते उदयसिंहः पुनः अभवत् । सः वनवीरम्  
अदण्डयत् । आत्रा च ताम् अपूजयत् । ततः स चिरम्  
अमर्षेण पूजाः अपातयत् ।

अन्ता सा स्वामिगन्ता पञ्चा या स्वपुत्रम् दत्वा  
स्वामिलतम् अपरात् ।

परमाणु

१. नयशब्दः — आत्रा — आपा  
अपयत् — परं सरं दत्ता  
शायनम् — शिरं हृदयं  
कराण्डका — उदयम्  
निधाय — दत्ता  
मृत्यु — गच्छत्  
पथे — पथे







त्रयाक्षराः पाठः

वर्णाः तेषाम् उच्चारणं स्वानाम् च

शुक्रः - १ शिष्य संस्कृतं कीदृशं वर्णाः जानन् ?

शिष्यः - गुरो! संस्कृतं उपलब्धत्वा उच्चारणं वर्णाः जानन्।  
त्रयाक्षराः (वराः), पञ्चाक्षराः ऽपञ्चाक्षराणि च।  
अपञ्चाक्षराणि पञ्चाक्षराणिः (पराः), पञ्चाक्षराः  
पञ्चदशः, पञ्चाक्षराः उच्चारणः, ५ अक्षराणि च।

शुक्रः - १ शिष्य! त्वराणाम् किम् लक्षणम् ज्ञेयम्।

शिष्यः - त्वेव राजन् इति (वराः)। तेषाम् वर्णानाम्  
उच्चारणं अपञ्चाक्षराणां वर्णानाम् साहाय्यस्य भवेत्।  
ते भवन्ति ते स्वराः जानन्। एतेषु 'अ, इ, उ,  
ए, ओ, औ' इति पञ्च लघुस्वराः, ४ अर्थाः 'इ, उ, ए, ओ',  
ते, 'अ, इ, उ, ए' इति उपलब्धत्वा तेषां लघुस्वराः।

शुक्रः - १ शिष्य! ऽपञ्चाक्षराणि किम् जानन् ?

शिष्यः - तेषाम् वर्णानाम् उच्चारणम् (वराणाम्)  
साहाय्यं भवति तेषाम् त्रिनिपञ्चाक्षरा निजवन्ति।  
ते त्रिनिपञ्चाक्षरा भवन्ति

पराः - १ वर्णाः = अः - अ इ उ ए ओ

पञ्चाक्षराः = अः - अ इ उ ए ओ

लघुस्वराः = अः - अ इ उ ए ओ

लघुस्वराः = अः - अ इ उ ए ओ

लघुस्वराः = अः - अ इ उ ए ओ

पञ्चाक्षराः - अ इ उ ए ओ

अक्षराः - अ इ उ ए ओ

उच्चारणः = - , विनिर्दिष्टम् (ः)।

शुक्रः - १ वर्णाः तेषाम् वर्णानाम् उच्चारणं  
स्वानाम् किम् जानन्

शिष्यः - १ गुरो! वर्णानाम् उच्चारणं स्वानाम् किम्



1811/1812

[illegible][illegible]

ਸ, ਟ, ਰ ਸਾਧਨਾਂ ਦੁਆਰਾ

ॐ, सु, ल, भागवत

3, 3, 5,  $\frac{2}{118}$   $\frac{1}{24012}$   $\frac{1}{41061}$  /

921464

1  
50106H 7.

$\frac{2}{5} \frac{1}{10}$

4241:

4061111 : 1

$\frac{1}{341} - \frac{1}{341}$

1841.

48160

476-126-24

मा. १०५५

Pr: - My dear Mrs. I can't 418:

F18214 F18215 = 18214



0414101 - 02  
418121627



## अथ ०५०००० - पारिशिष्टम्

०५०००० :- ०५०००० बड़े शब्द हैं जो हमें शब्द मापना करने के लिए शब्द लिखने का शौक कराता है।

वर्ण :- वर्ण उस कोला से कोला खाने को कहते हैं, जिस को पौर खण्ड में हो सके।

वर्ण माला

स्वर { अ, इ, उ, ऋ, ए — इन्द्रस्वर  
आ, ई, औ, ओ, ए, ऐ, औ, ओ — दीर्घस्वर

०५०००० :-

स्वर -

कवर्ग (=क) - क ख ग घ ङ  
पवर्ग (=प) - प फ ब भ म  
टवर्ग (=ट) - ट ठ ड ढ ण  
तवर्ग (=त) - त थ द ध न  
यवर्ग (=य) - य र ल व श

अन्तःस्व - य र ल व

अक्षर - श घ ङ ण

अक्षरानुवा - ङ (अक्षर), ङ (विरण)

## उच्चारण स्थान

पृष्ठ ८६

उच्चारण स्थान	स्वर	०५००००		
		स्वर	अन्तःस्व	अक्षर
कवर्ग	अ, आ	क ख ग घ ङ	-	ह, ङ
पवर्ग	इ, ई	प फ ब भ म	प	श
टवर्ग	ऊ, औ	ट ठ ड ढ ण	र	ल
तवर्ग	ए	त थ द ध न	म	न
यवर्ग	अ, आ	य र ल व श	-	-
अक्षरानुवा	इ, ई	-	-	-
अक्षरानुवा	ऊ, औ	-	-	-
अक्षरानुवा	-	-	-	-
अक्षरानुवा	-	-	व	-
अक्षरानुवा	-	-	-	-



कारक

कारक :- वाक्य में जिस के साथ क्रिया का सम्बन्ध होता है उसे कारक कहते हैं। जैसे 'बालकः पठति'। इस वाक्य में पठति क्रिया का सम्बन्ध बालकः के साथ है। इस लिये बालकः कारक है। इसी प्रकार 'नृपः ब्राह्मणभ्यः भक्षणं पच्यति' इस वाक्य में 'नृपः', 'ब्राह्मणभ्यः' तथा 'भक्षणं' कारक हैं।

कारक ७: होते हैं :-

१- कर्ता, २- कर्म, ३- कारण, ४- सम्प्रदान, ५- अपादान, ६- सम्बन्ध, ७- विभाक्ति

नोट :- 'सम्बन्ध' तथा 'सम्बन्धायन' का क्रिया के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता - जैसे रामस्य पुस्तकम् (राम की पुस्तक), हे राम! इस लिये 'सम्बन्ध' तथा 'सम्बन्धायन' कारक नहीं कहलाते।

विभाक्ति :- जिस प्रत्यय से वचन और कारक का बोध होता है उसे विभाक्ति कहते हैं। जैसे नरः = एक मनुष्य है। नराः = दो मनुष्यों हैं। नराः = लड़के मनुष्यों हैं।

विभाक्तियाँ लाते होते हैं :-

१- प्रथमा, २- द्वितीया, ३- तृतीया, ४- चतुर्थी,  
५- पञ्चमी, ६- षष्ठी, ७- सप्तमी।

कारक	विभाक्ति	प्रत्यय
१- कर्ता	प्रथमा	ने, ल, का
२- कर्म	द्वितीया	से, के, जता
३- कारण	तृतीया	के लिये
४- सम्प्रदान	चतुर्थी	से
५- अपादान	पञ्चमी	को, के, को
६- (सम्बन्ध)	षष्ठी	में, पर
७- सम्बन्धायन	सप्तमी	है, पर
८- (सम्बन्धायन)	प्रथमा	

वचन

संस्कृत में तीन वचन होते हैं :-

१- एकवचन, २- द्विवचन, ३- बहुवचन।

एक के लिये एकवचन का प्रयोग होता है। जैसे - बालः गच्छति।  
दो के लिये द्विवचन का प्रयोग होता है। जैसे - बालौ गच्छतः।  
तीन तथा उस से अधिक के लिये बहुवचन का प्रयोग होता है।  
जैसे - बालाः गच्छन्ति।



३।७६ रूप

१. प्रकारान्त पुल्लिङ्ग

बाल (= बालक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कता - प्रथमा	बालः	बालौ	बालाः
कर्म - द्वितीया	बालम्	बालौ	बालान्
करण - तृतीया	बालन्	बालाम्भ्याम्	बालः
लभ्यदान - चतुर्थी	बालाय	बालाम्भ्याम्	बालभ्यः
लभ्यदान - पञ्चमी	बालात्	बालाम्भ्याम्	बालभ्यः
लभ्यदान - षष्ठी	बालस्य	बालयोः	बालानाम्
लभ्यदान - सप्तमी	बाले	बालयोः	बालेषु
लभ्यदान - अष्टमी	१ बाल!	१ बालौ!	१ बालाः!

१. प्रकारान्त पुल्लिङ्ग

	कल	कल	कलानि
कता - प्रथमा	कलम्	कलम्	कलानि
कर्म - द्वितीया	कलम्	कलम्	कलानि

(१ बाल का तरह)

१. प्रकारान्त पुल्लिङ्ग

बाला (= लड़की)

	बाला	बाल	बालाः
प्रथमा	बाला	बाल	बालाः
द्वितीया	बालाम्	"	"
तृतीया	बालया	बालाम्भ्याम्	बालाभ्यः
चतुर्थी	बालाय	"	बालाभ्यः
पञ्चमी	बालायाः	"	"
षष्ठी	"	बालयोः	बालानाम्
सप्तमी	बालायाम्	"	बालासु
अष्टमी	१ बाल!	१ बाल!	१ बालाः!

१. प्रकारान्त पुल्लिङ्ग

मान

	मानः	मान	मानयः
प्रथमा	मानः	मान	मानयः
द्वितीया	मानम्	"	मानान्
तृतीया	मानका	मानाम्भ्याम्	मानाभ्यः
चतुर्थी	मानये	"	मानाभ्यः
पञ्चमी	मानः	"	"
षष्ठी	"	मानयोः	मानानाम्
सप्तमी	माना	"	मानासु
अष्टमी	१ मान!	१ मान!	१ मानयः!



३कारान्त गुंलकलिङ्गः

साय ( = सायन युक्त )

पथमा	सायः	साय	सायवः
ॐ दी या	सायम	साय	सायन
तृतीया	सायम	सायमम	सायमिः
चतुर्थी	सायव	"	सायमयः
पञ्चम्या	सायः	"	"
षष्ठी	"	सायवाः	सायवाय
सप्तम्या	साय	"	सायव
सं०	ॐ साय !	ॐ साय !	ॐ सायव !

३कारान्त गुंलकलिङ्गः

वारि ( = जल )

पथमा	वारि	वारिण	वारिण
ॐ दी या	"	वारिण	वारिणः
तृतीया	वारिण	वारिमम	वारिमिः
चतुर्थी	वारिण	"	वारिमयः
पञ्चम्या	वारिणः	"	"
षष्ठी	"	वारिणः	वारिणवाय
सप्तम्या	वारिण	वारिण	वारिणव
सं०	ॐ वारि ! वारि !	ॐ वारिण !	ॐ वारिण !

३कारान्त गुंलकलिङ्गः

दामि ( = दही )

पथमा	दामि	दामिना	दामिण
ॐ दी या	"	दामिना	दामिणः
तृतीया	दामि	दामिमम	दामिमिः
चतुर्थी	दामि	"	दामिमयः
पञ्चम्या	दामिः	"	"
षष्ठी	"	दामिनाः	दामिनाय
सप्तम्या	दामिना, दामिण	"	दामिणव
सं०	ॐ दामि ! ॐ दामि	ॐ दामिना !	ॐ दामिण !



३ कारान्त नृपसकलितुं  
मय्य (= २१६५)

करी -  
कर्म -  
करण -  
काम्यदा -  
अपवाद -  
लक्षणा -  
अर्थान्तर -  
अर्थान्तर

पथमा	मय्य	मय्यता	मय्यति
द्वितीया	"	"	"
तृतीया	मय्यता	मय्यरथान्	मय्यतिः
चतुर्थी	मय्यत	"	मय्यत्ये.
पञ्चमी	मय्यतः	"	"
षष्ठी	"	मय्यताः	मय्यतान्
सप्तमी	मय्यत	"	मय्यत
अष्टमी	१ मय्या १ मय्यु १ मय्यता १ मय्यति		

सर्वगत  
पुंल्लङ् - सर्व (= सर्व)

पथमा	सर्वः	सर्वा	सर्व
द्वितीया	सर्वम्	"	सर्वान्
तृतीया	सर्वता	सर्वरथान्	सर्वतिः
चतुर्थी	सर्वतम्	"	सर्वत्ये.
पञ्चमी	सर्वतः	"	"
षष्ठी	सर्वतम्	सर्वताः	सर्वतान्
सप्तमी	सर्वतम्	"	सर्वत

नृपसकलितुं

पथमा	सर्वम्	सर्व	सर्वान्
द्वितीया	"	"	"

शेष पुंल्लङ् वत्

पुं - विभक्ति

पथमा	कः	का	क
द्वितीया	कम्	"	कान्
तृतीया	कता	कारथान्	कतिः
चतुर्थी	कतम्	"	कत्ये.
पञ्चमी	कतः	"	"
षष्ठी	कतम्	कताः	कतान्
सप्तमी	कतम्	"	कत



नृपसंकलिङ्गः

पथमा +  
१२२  
१५ ती पा

विम	१	का
"	"	"
१	१	१

शेष पुनिल्लङ्गः वत

पुं० तद (= वद)

पथमा  
१२२  
१५ ती पा  
तु ती पा  
चरपा  
पथमा  
खली  
लक्षमा

मः	१	१
तम	"	तान
तन	तान्धमान	तः
तलम	"	तन्धयः
तलमान	"	"
तलय	तपाः	तलमान
तलमान	"	तल

नृपसंकलिङ्गः

पथमा  
१२२  
१५ ती पा

तत	१	तानि
"	"	"
१	१	१

शेष पुनिल्लङ्गः वत

पुं० यत (= जा)

पथमा  
१२२  
१५ ती पा  
तु ती पा  
चरपा  
पथमा  
खली  
लक्षमा

यः	१	१
यम	"	यान
यन	यान्धमान	यः
यलम	"	यन्धयः
<del>यलमान</del> यलमान	"	"
यलय	यपाः	यलमान
यलमान	"	यल

नृपसंकलिङ्गः

पथमा  
१२२  
१५ ती पा

यत	१	यानि
"	"	"
१	१	१

शेष पुनिल्लङ्गः वत



### प्रथम

प्रथमा	प्रथम	प्रथमा	प्रथम
१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००

### द्वितीय

प्रथमा	द्वितीय	प्रथमा	द्वितीय
१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००
१००	१००	१००	१००

### तिस्रो

संस्कृत में तीन काल होते हैं :—

१. — वृत्तकाल
२. — वर्तमान काल
३. — भाविष्यत काल

वृत्तकाल के लिये लट् लकार का प्रयोग होता है।  
 वर्तमान काल के लिये लृट् लकार का प्रयोग होता है।  
 भाविष्यत काल के लिये लृट् लकार का प्रयोग होता है।  
 इस के अतिरिक्त प्रयोगों के लिये लृट् लकार का प्रयोग होता है।  
 अतः प्रयोग के लिये लृट् लकार का प्रयोग होता है।

### पुरुष

तीन पुरुष १ २ ३

१. — प्रथम पुरुष
२. — मध्यम पुरुष
३. — तृतीय पुरुष

प्रत्येक पुरुष में तीन तीन वचन होते हैं। एक वचन द्विवचन तथा



संस्कृत में तीनों लिङ्गों के लिये एक ही क्रिया का प्रयोग होता है।

आदि रूप

प्रथम पाठ

पठ = पठेन

लट् लकार (वर्तमान काल) के प्रत्यय

#	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
1	प्रथम पुरुष	ति	तः	तन्ति
2	मध्यम पुरुष	सि	थः	थ
3	उत्तम पुरुष	आमि	आवः	आमः

लट् लकार के रूप

प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लङ् लकार (भूत काल) के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	त	ताम्	मन्
मध्यम पुरुष	:	तम्	त
उत्तम पुरुष	आम्	आव	आम

लङ् लकार के रूप

द्वयार्थः - लङ् लकार आदि से मिलकर प्रथम पाठ होता है।

प्रथम पुरुष	पठाम	पठाम	पठाम
मध्यम पुरुष	पठसि	पठसि	पठसि
उत्तम पुरुष	पठाम	पठाव	पठाम

लट् लकार के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	त	ताम्	तन्ति
मध्यम पुरुष	-	तम्	त
उत्तम पुरुष	आमि	आव	आमः

लट् लकार के रूप

प्रथम पुरुष	पठति	पठाम	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठसि	पठसि
उत्तम पुरुष	पठामि	पठाव	पठाम

विहित लिङ्ग के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	ति	इताम्	इयः
मध्यम पुरुष	सि	इसि	इय
उत्तम पुरुष	आमि	इवि	इमि

प्रथम पाठ - लट् लकार, लङ् लकार, आदि से मिलकर प्रथम पाठ होता है।  
 प्रथम पाठ - पठाम, पठसि, पठाम, पठाव, पठाम।



### प्रथम

प्रथम	महान	मावाह	वम
द्वितीया	माह	"	महान
तृतीया	माह	मावाह	महान:
चतुर्थी	महान	"	महानम
पंचमी	माह	"	महान
षष्ठी	महान	मावाह:	महानक
सप्तमी	माह	"	महान

### द्वितीय

प्रथम	वम	प्रथम	प्रथम
द्वितीया	वम	प्रथम	प्रथम
तृतीया	वम	प्रथम	प्रथम:
चतुर्थी	प्रथम	"	प्रथमम
पंचमी	वम	"	प्रथम
षष्ठी	तव	प्रथम:	प्रथमक
सप्तमी	वम	"	प्रथम

### तिरुन्त

#### काल

संस्कृत में तीन काल होते हैं : —

1. — अतकाल
2. — वर्तमान काल
3. — भविष्य काल

अतकाल के लिये लट् लकार का प्रयोग होता है।  
 वर्तमान काल के लिये लृट् लकार का प्रयोग होता है।  
 भविष्य काल के लिये लृट् लकार का प्रयोग होता है।  
 इस के अतिरिक्त प्रथमा, प्रथम के लिये लृट् लकार, तथा  
 प्रथम के लिये लृट् लकार का प्रयोग होता है।

#### पुरुष

तीन पुरुष लृट् लृट् लृट्

1. — प्रथम पुरुष
2. — मध्यम पुरुष
3. — तृतीय पुरुष

प्रथम पुरुष में तीन तीन वचन होते हैं। एक वचन द्विवचन तथा  
 बहुवचन।



संस्कृत में तीनों लिङ्गों के लिये एक ही क्रिया का प्रयोग होता है।

मान रूप

प्रथम लिङ्ग प्रथम पद = पठेत्

लट् लकार (वर्तमान काल) के प्रत्यय

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	अथवा चतुर्थ
प्रथम पुरुष	ति	तः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	सि	सः	पठथ
उत्तम पुरुष	प्रथम	प्रथमः	प्रथमः

लट् लकार के रूप

प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठसः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लङ् लकार (भूत काल) के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	त	ताम्	मन
मध्यम पुरुष	:	तम्	त
उत्तम पुरुष	प्रथम	प्रथम	प्रथम

लङ् लकार के रूप

द्वयार्थः - लङ् लकार मात्र ही पठित् लय जाइता जाता है।

प्रथम पुरुष	पठत्	पठताम्	पठन्त
मध्यम पुरुष	पठतः	पठताम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठाम	पठाव	पठाम

लोट् लकार के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	त	ताम्	पठन्ति
मध्यम पुरुष	-	तम्	त
उत्तम पुरुष	प्रथम	प्रथम	प्रथम

लोट् लकार के रूप

प्रथम पुरुष	पठ	पठाम	पठन्त
मध्यम पुरुष	पठ	पठाम	पठन्त
उत्तम पुरुष	पठामि	पठाव	पठाम

विहित लिङ्ग के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	ति	इताम्	इतः
मध्यम पुरुष	ति	इताम्	इतः
उत्तम पुरुष	इताम्	इत	इत

प्रथम लिङ्ग प्रथम पद = पठेत्  
मध्यम लिङ्ग मध्यम पद = पठथ  
उत्तम लिङ्ग उत्तम पद = पठामि







## तदादिगण

तदादिगण में 'अ' आत्, 'इ' पद्य के काल में 'अ' विकरण  
 'आ' है। 'अ' केवल इतना है, कि जहाँ तदादिगण का आत् 'अ' के  
 विकरण तथा 'अ' के विकरण के पहले 'अ' 'इ' 'उ' तथा 'अ' का  
 'अ' तथा 'अ' है। जहाँ तदादिगण में ऐसा नहीं होता।  
 तदादिगण के लिये  $जि + य + ति \Rightarrow ज + य + ति \Rightarrow जय + ति$   
 $= जयति$ । परन्तु  $तद + य + ति = तदति$

तद = तद + ति

लट लकार

प्रथम पुरुष	तदति	तदतः	तदात्त
मध्यम पुरुष	तदात्	तदयः	तदय
उत्तम पुरुष	तदाति	तदायः	तदामः

लङ लकार

प्र० पु०	तदत	तदताम्	तदन्त
म० पु०	तद	तदाम	तदत
उ० पु०	तदाम	तदाव	तदाम

लोट लकार

प्र० पु०	तद	तदताम्	तदन्त
म० पु०	तद	तदाम	तदत
उ० पु०	तदाति	तदाव	तदाम

लृट लकार

प्र० पु०	तदत	तदताम्	तदयः
म० पु०	तदः	तदाम	तदत
उ० पु०	तदयाम	तदव	तदम

लृट लकार

प्र० पु०	तदत्पति	तदत्पतः	तदत्पान
म० पु०	तदत्पान	तदत्पयः	तदत्पय
उ० पु०	तदत्पाम	तदत्पावः	तदत्पामः

तिरव, लिप्, मिल, स्पृश, इव (इच्छा), पश्य (पश्य), आदि  
 तदादिगण के अन्त आत्, 'अ' के लिये 'अ' को इला, पकर  
 जानने चाहिये।

## दिनादिगण

दिनादिगण में 'अ' विकरण 'आ' है जहाँ  $दि + य + ति$   
 $= दिवति$ ,  $नृ + य + ति = नृयति$ ,  $नृ + य + ति = नृयाम$



$\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{30}{30}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$

$\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{30}{30}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$

$\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{30}{30}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$

$\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{30}{30}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$

$\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{30}{30}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$

$\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{30}{30}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$

$\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{30}{30}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$

$\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{30}{30}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$

$\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{30}{30}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$

$\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$   
 $\frac{30}{30}$        $\frac{100}{100}$        $\frac{100}{100}$



Syllabus in SAMSKRIT.

Class VI

2. पूर्ण विचार, प्रहारी तथा आचार्य का पूर्ण स्तोत्र, प्रहारी का अन्तर्गत  
सिद्धांत प्रहारी।

2.  $\sqrt{91} = \frac{1}{2}$ ,  $\sqrt[3]{64} = \frac{1}{4}$ ,  $\sqrt[4]{81} = \frac{1}{3}$ ,  $\sqrt[5]{32} = \frac{1}{5}$ ; —

(2)  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

(2)  $\frac{1}{\sqrt{1-x^2}} = \frac{1}{\sqrt{(1-x)(1+x)}} = \frac{1}{\sqrt{1-x}} \cdot \frac{1}{\sqrt{1+x}}$

(2)  $\frac{1}{10} \times \frac{1}{10} = \frac{1}{100}$

2. संविधान (२). सर्व, मत्, मित्र, मत् तुं ० व न्युं ० ।  
 (२), मत्, मत्, मत्, मत् ।

8.  $\frac{1}{1000} \text{ m}^3 \text{ of water} = \frac{1}{1000} \times 1000 \text{ kg} = 1 \text{ kg}$

2.  $\frac{1}{x^2}, \frac{1}{x^3}, \frac{1}{x^4}$  यांचा  $\frac{1}{x^2}$  वर  $\frac{1}{x^3}$  पर्यंतचा माला

१८. १८५१ ई. १८५२ ई. १८५३ ई. १८५४ ई. १८५५ ई. १८५६ ई.

कह, कह, जाह, हा, का, ना, रत्ना।

- उ. एकल ३५६०॥ का मूल्य १५९॥ के लिए ४२१०॥

- [illegible]

६. इन ३ वंशों में अंतर्गत की प्रजातियाँ - कुत्ता, बिल्ली, भेड़, गाय,  
बकरी, ऊँट, घोड़ा, मछली, चूहा, कौआ, तोता, पक्षी, मनुष्य, आदि।

20. दिए गए संस्कृत पद्या का शुद्ध 3 मात्रा (0) युक्त अक्षर 35/14  
 21. दिए गए पद्या का शुद्ध 3 मात्रा (0) युक्त अक्षर (Recitation)

२२.  $\frac{5}{11} \times \frac{7}{10} = \frac{35}{110}$

22.  $\frac{22}{100} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{100}$   $\frac{11}{100} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{200}$   $\frac{11}{200} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{400}$   $\frac{11}{400} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{800}$   $\frac{11}{800} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{1600}$   $\frac{11}{1600} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{3200}$   $\frac{11}{3200} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{6400}$   $\frac{11}{6400} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{12800}$   $\frac{11}{12800} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{25600}$   $\frac{11}{25600} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{51200}$   $\frac{11}{51200} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{102400}$   $\frac{11}{102400} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{204800}$   $\frac{11}{204800} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{409600}$   $\frac{11}{409600} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{819200}$   $\frac{11}{819200} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{1638400}$   $\frac{11}{1638400} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{3276800}$   $\frac{11}{3276800} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{6553600}$   $\frac{11}{6553600} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{13107200}$   $\frac{11}{13107200} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{26214400}$   $\frac{11}{26214400} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{52428800}$   $\frac{11}{52428800} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{104857600}$   $\frac{11}{104857600} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{209715200}$   $\frac{11}{209715200} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{419430400}$   $\frac{11}{419430400} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{838860800}$   $\frac{11}{838860800} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{1677721600}$   $\frac{11}{1677721600} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{3355443200}$   $\frac{11}{3355443200} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{6710886400}$   $\frac{11}{6710886400} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{13421772800}$   $\frac{11}{13421772800} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{26843545600}$   $\frac{11}{26843545600} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{53687091200}$   $\frac{11}{53687091200} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{107374182400}$   $\frac{11}{107374182400} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{214748364800}$   $\frac{11}{214748364800} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{429496729600}$   $\frac{11}{429496729600} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{858993459200}$   $\frac{11}{858993459200} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{1717986918400}$   $\frac{11}{1717986918400} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{3435973836800}$   $\frac{11}{3435973836800} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{6871947673600}$   $\frac{11}{6871947673600} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{13743895347200}$   $\frac{11}{13743895347200} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{27487790694400}$   $\frac{11}{27487790694400} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{54975581388800}$   $\frac{11}{54975581388800} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{109951162777600}$   $\frac{11}{109951162777600} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{219902325555200}$   $\frac{11}{219902325555200} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{439804651110400}$   $\frac{11}{439804651110400} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{879609302220800}$   $\frac{11}{879609302220800} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{1759218604441600}$   $\frac{11}{1759218604441600} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{3518437208883200}$   $\frac{11}{3518437208883200} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{7036874417766400}$   $\frac{11}{7036874417766400} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{14073748835532800}$   $\frac{11}{14073748835532800} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{28147497671065600}$   $\frac{11}{28147497671065600} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{56294995342131200}$   $\frac{11}{56294995342131200} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{112589990684262400}$   $\frac{11}{112589990684262400} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{225179981368524800}$   $\frac{11}{225179981368524800} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{450359962737049600}$   $\frac{11}{450359962737049600} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{900719925474099200}$   $\frac{11}{900719925474099200} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{1801439850948198400}$   $\frac{11}{1801439850948198400} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{3602879701896396800}$   $\frac{11}{3602879701896396800} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{7205759403792793600}$   $\frac{11}{7205759403792793600} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{14411518807585587200}$   $\frac{11}{14411518807585587200} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{28823037615171174400}$   $\frac{11}{28823037615171174400} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{57646075230342348800}$   $\frac{11}{57646075230342348800} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{115292150460684697600}$   $\frac{11}{115292150460684697600} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{230584300921369395200}$   $\frac{11}{230584300921369395200} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{461168601842738790400}$   $\frac{11}{461168601842738790400} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{922337203685477580800}$   $\frac{11}{922337203685477580800} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{1844674407370955161600}$   $\frac{11}{1844674407370955161600} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{3689348814741910323200}$   $\frac{11}{3689348814741910323200} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{7378697629483820646400}$   $\frac{11}{7378697629483820646400} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{14757395258967641292800}$   $\frac{11}{14757395258967641292800} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{29514790517935282585600}$   $\frac{11}{29514790517935282585600} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{59029581035870565171200}$   $\frac{11}{59029581035870565171200} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{118059162071741130342400}$   $\frac{11}{118059162071741130342400} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{236118324143482260684800}$   $\frac{11}{236118324143482260684800} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{472236648286964521369600}$   $\frac{11}{472236648286964521369600} \times \frac{1}{2} = \frac{11}{944473296573929042739200}$   $\frac{11}{944473296573929042739200} \times \frac{1}{2}$

- गुरु - इस मंत्र के विषय यह है कि ६४ पुस्तकें का पाठ  
पूरा करने पर जो भी भक्त भक्ति में आता वह सब काम करके देखा जाता  
है। संसार के कार्य बिलकुल समाप्त हो जाते हैं।  
समस्त ही मोक्षार्थी को प्रत्येक पुस्तक में ही ही ६४ मंत्रों में  
ब्रह्मा ही साक्षात् की विषय पाठ्य पत्रों में प्रत्येक एक  
अध्याय में तथा प्रत्येक पुस्तक के अंत में लिखने के माध्यम से  
में दिया जावे ।











